वर्ष 45 अंक 10 अक्टूबर 2018 ₹ 15/-

हंसती दुनिया

हँसती दुनिया

● वर्ष 45 ● अंक 10 ● अक्टूबर 2018 ● पृष्ठ 52

बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका

(पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

प्रकाशक एवं मुद्रक : **सी. एल. गुलाटी**
ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली–9
हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी–220 फेस–II,
नोएडा–201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर
सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी,
दिल्ली–09 से प्रकाशित किया।

मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद

सम्पादक **विमलेश आहूजा** सहायक सम्पादक **सुभाष चन्द्र**

Ph.: 011-47660200
Fax: 01127608215
Email: editorial@nirankari.org
Website: http//www.nirankari.org

Subscription Value

	India/ Nepal	UK	Europe	USA	Canada/ Australia
Annual	Rs.150	£15	€ 20	$25	$30
5 Years	Rs.700	£70	€ 95	$120	$140

Other Countries :
Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.

स्तम्भ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
11. समाचार
27. अनमोल वचन
38. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
49. रंग भरो
50. आपके पत्र मिले

चित्रकथाएं

12. दादा जी
34. किट्टी

कविताएं

17. तारे, बूंद ओस की
: सुकीर्ति भटनागर

21. सूरज सुबह निकलता है, स्वभाव फूल जैसा
: हरजीत निषाद

29. विजय पर्व
: डॉ. परशुराम शुक्ल

30. चिड़िया
: कीर्ति श्रीवास्तव

30. नन्हीं चिड़िया
: राजेन्द्र निशेश

33. ऐसा काम न करना, शहर से अच्छा गाँव
: राजकुमार जैन 'राजन'

46. चार नन्हीं क्षणिकाएं
: अशोक जैन

कहानियां

9. नदी का घमण्ड
: राजकुमार जैन 'राजन'

18. साधनों का तर्कपूर्ण सही उपयोग
: डॉ. जमनालाल बायती

19. चंदन बना कोयला
: भारतभूषण शुक्ल

20. परोपकार का सुख
: राधेलाल 'नवचक्र'

24. वह कौन था?
: डॉ. दर्शन सिंह आशट

31. चौथे सेवक की बुद्धिमानी
: अशोक जैन

39. दोषी कौन?
: डॉ. मन्तोष भट्टाचार्य

47. गुलाब-सा खिलो
: पृथ्वीराज

विशेष/लेख

6. सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज
: सी. एल. गुलाटी

8. प्रमुख दिवस : अक्टूबर माह
: ओम सिंह

16. समुद्री घोड़ा
: किरण बाला

22. लेसर किरणें
: कैलाश जैन एडवोकेट

28. ऊंट की खूबियां
: डॉ. विनोद गुप्ता

42. शुतुरमुर्ग
: कैलाश जैन एडवोकेट

गतिवान रहें

जीवन में गति का अपना महत्व है। गतिवान को जीवन का पर्याय भी माना गया है। गति शिथिल पड़ते ही व्यक्ति के मन में अनेकों विचार उठने शुरू हो जाते हैं कि मैं कमजोर हो रहा हूँ, ढीला पड़ रहा हूँ, मुझसे कोई कार्य भी ढंग से नहीं हो पाता, इत्यादि-इत्यादि।

बच्चा जब जन्म लेता है तभी से गतिमान हो जाता है। यों भी कह सकते हैं कि जन्म से पहले ही बच्चे की हलचल सुनाई देने लगती है। इसी तरह उसकी हलचल जन्म के बाद निरन्तर बढ़ती रहती है। यही गतिविधि उसके शरीर के हर अंग को विकसित भी करती है और वह एक दिन सक्षम व्यक्ति बन जाता है।

प्रकृति भी निरन्तर गतिशील है। सूर्य अपनी रोशनी, अपनी किरणें, अपनी ऊर्जा निरन्तर सभी को बिना भेदभाव के देता रहता है। इसी तरह चन्द्रमा भी अपनी रोशनी से शीतलता प्रदान करता है। भले ही वह रोशनी सूर्य से लेकर ही हमको पहुँचाता है।

धरती भी निरन्तर सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाने में तथा समस्त प्राणीजगत और पेड़-पौधों को अपनी ऊर्जा और शक्ति से जीवन्तता प्रदान करने में गतिमान है। वायु भी हमें प्राण शक्ति दे रही है जो कि व्यक्ति के जीवित रहने का एक आवश्यक अंग है। इसी तरह अग्नि, जल, आकाश प्रकृति के सभी अंग निरन्तर गतिमान हैं।

सोचने और विचार करने का विषय है कि हमें बिना मांगे ही सूर्य रोशनी देता है, चन्द्रमा शीतलता, वायु प्राण शक्ति देती है, अग्नि तेज देती है और पृथ्वी सभी को आश्रय देती है। फिर हम इनसे क्या सबक सीखते हैं और इन सबको क्या लौटाते हैं या वापस देते हैं? प्रकृति के इन सभी तत्वों से हम जीवित और गतिमान होते हैं। प्रकृति अगर किसी भी एक तत्व को निरन्तरता और गतिरहित कर दे तो हमारे प्राण उसी समय संकट में पड़ जाएंगे।

प्रकृति अपना कार्य बिना किसी इच्छा या अपेक्षा के कर रही है, इसे प्रकृति का स्वभाव ही कह सकते हैं। इसी कारण प्रकृति और स्वभाव को हम पर्यायवाची शब्द भी कहते हैं।

प्यारे साथियों! हमें भी अपनी प्रकृति और स्वभाव का निरीक्षण करना है कि क्या हम भी निरन्तर गतिवान हैं, सभी को गति देने के लिए। कहीं हम किसी की गति में बाधा तो नहीं पहुँचा रहे? किसी के अच्छे कार्य में व्यवधान तो उत्पन्न नहीं कर रहे? कहीं हम किसी के निर्धारित लक्ष्य में रोड़ा तो नहीं अटका रहे? आदि-आदि। अगर इनमें से किसी का भी उत्तर हाँ में है तो भी गति तो हम कर ही रहे हैं लेकिन अपनी दुर्गति के बीज भी बो रहे हैं, फिर हमारी प्रकृति और हमारा स्वभाव भी वैसा ही हो जाएगा। इसके परिणाम हमें स्वयं ही भोगने पड़ेंगे।

अगर हम ऐसा कोई भी कार्य नहीं कर रहे हैं जो दूसरों को परेशानी पैदा करे तो हम सद्मार्ग की ओर अग्रसर हो रहे हैं और इस तरह की यात्रा को गति देना ही हमारा स्वभाव बन जाएगा तो हम प्रकृति के कार्य में सहयोगी हो जाएंगे और अन्ततः परमार्थ के कार्य में भी सहयोगी बनेंगे।

– विमलेश आहूजा

हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 173

निरंकार दी ज़ात है सच्ची बाकी झूठियां ज़ातां ने।
इक्को गल ही लेखे पैणी होर कूड़ियां बातां ने।
देवण वाले दाते रहणैं रहणियां नहीं एह दातां ने।
इक्को सच्चे नाम दे बाझों धृग धृग करामातां ने।
रहन्दी ए जो कोल पति दे उस दीयां वाह बरसातां ने।
जिसदा प्रीतम है परदेसी उस दीयां कालियां रातां ने।
घर दा मालक घर न दिस्से केहड़े कम सुगातां ने।
कहे अवतार गुरु दे राहीं रब नाल होन्दियां बातां ने।

भावार्थ : उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि इस नश्वर संसार में केवल निरंकार-प्रभु का ही अस्तित्व है बाकी सब अस्तित्वहीन हैं। दुनिया की तमाम जातियां-प्रजातियां नाशवान हैं, झूठी हैं। केवल निरंकार ही अविनाशी और शाश्वत सत्य है। सदैव काल रहने वाला है। ध्यान रहे कि केवल एक ही बात लेखे लगने वाली है, बाकी सारी बातें झूठी और अर्थहीन हैं। यह निश्चित है कि देने वाला देनहार दाता ही सदैव रहने वाला है बाकी कोई भी दातें सदैव रहने वाली नहीं हैं। इन्सान कितनी भी करामात करे, भागदौड़ कर कितनी ही उपलब्धियां क्यों न हासिल कर ले, परमात्मा के नाम अर्थात् सद्गुरु द्वारा इसका बोध प्राप्त करने के अलावा सारी बातें सारहीन और व्यर्थ हैं। इस नामधन को ही सन्तों-महापुरुषों ने सच्चा धन बताया है, बाकी सारी धन-सम्पदाएं एक न एक दिन नष्ट हो जाती हैं लेकिन इस प्रभु का बोध हासिल करके, इसके ध्यान सुमिरण द्वारा जो अलौकिक धन प्राप्त किया गया वह कभी भी नष्ट होने वाला नहीं है। इस संसार में कमाया धन तो यहीं रह जाएगा लेकिन सद्गुरु की कृपा से प्राप्त नाम धन यहाँ भी काम आयेगा और वहाँ भी अर्थात् वह लोक-परलोक में सुख देने वाला है।

बाबा अवतार सिंह जी इन सांसारिक उदाहरणों द्वारा परमात्मा के दर्शन और इसके सान्निध्य से प्राप्त खुशी की ओर इन्सान का ध्यान आकृष्ट कराते हुए समझा रहे हैं कि दुनिया के लोगों, इस बात को ठीक से समझ लो कि सद्गुरु ही वह माध्यम है जिसके द्वारा भक्त परमात्मा के दर्शन भी करता है और इससे बातें भी करता है। संसार में लोग झूठी जात (अहं), मिथ्याबात और नाशवान दातों के पीछे भागते-भागते अपना बहुमूल्य जीवन नष्ट कर लेते हैं। इसलिए हर इन्सान को सद्गुरु द्वारा इस प्रभु का बोध हासिल करके अपना जीवन सफल करना चाहिए और अपनी जीवनयात्रा को सार्थक करना चाहिए।

सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज

– सी. एल. गुलाटी, सचिव, मुख्यालय संनिमं, दिल्ली

पूज्य सुदीक्षा जी का जन्म 13 मार्च, 1985 को पिता बाबा हरदेव सिंह जी और माता सविन्दर जी के घर सन्त निरंकारी कॉलोनी दिल्ली में हुआ। बाल्यावस्था में उन्हें माता-पिता तथा दादी निरंकारी राजमाता जी, नाना गुरमुख सिंह जी और नानी पूज्य मदन कौर जी का भरपूर प्यार-दुलार मिला और उनकी देखभाल में ही वे बड़ी हुई। उल्लेखनीय है कि पूज्य सुदीक्षा जी का जन्म बाबा हरदेव सिंह जी के सन्त निरंकारी मिशन की बागडोर संभालने के उपरान्त हुआ। उन्हें जन्म से ही सुन्दर वातावरण में आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त होने लगी। जब वे कुछ माह की ही थीं तब सद्गुरु बाबा जी उन्हें विश्व कल्याण यात्रा पर साथ ले गए। उनकी दोनों बहनें प्यार से कहती थी, ''समता, रेणुका की बहना, सुदीक्षा का क्या कहना।'' सत्संग में नियमित उपस्थिति का सुन्दर प्रभाव और बुजुर्गों के लिए सम्मान और विनम्रता के भाव उनके हृदय में हमेशा से रहे। वे अपनी पढ़ाई, खेल-कूद, मित्रों के साथ समय बिताने और सद्गुरु की आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षाओं के बीच खूबसूरत संतुलन बनाए रखती थीं।

उन्होंने बचपन से ही सन्त निरंकारी सेवादल के सदस्य के रूप में सन्त निरंकारी मिशन की गतिविधियों में योगदान देना शुरु कर दिया। वे बाल संगत, अंग्रेजी माध्यम संगत और वृक्षारोपण तथा स्वच्छता अभियान के कार्यक्रमों में नियमित रूप से सक्रिय रहती थीं। इन दिव्य गुणों को उन्होंने विरासत में प्राप्त किया। पूज्य सुदीक्षा जी के हृदय में बचपन से प्यार, दया और करुणा का भाव रहा।

पूज्य सुदीक्षा जी मन में अनेकों आशाएं और सपने संजोये बड़ी हो रही थीं। उनके मन-मस्तिष्क में सदैव उपकारी भावनाएं जन्म लेतीं और पलती थीं। जब कभी वे किसी दुखी-पीड़ित, भूखे-प्यासे व्यक्ति को देखतीं तो द्रवित हो उठतीं और उसे भोजन कराने का प्रयास करने लगतीं। धीरे-धीरे उनके अन्दर एक ईमानदार, परिपक्व और सच्चाई से भरा इन्सान विकसित हो रहा था। जब उन्होंने आस-पास शारीरिक दुख व मृत्यु होते देखा तो बाबा हरदेव सिंह जी से पूछा, ''बाबा जी, परमात्मा ऐसा क्यों करता है? क्यों लोगों को दुख, पीड़ा सहनी पड़ती है।'' तब बाबा जी ने उन्हें समझाया, ''परमात्मा आपको लोगों की मदद करने, उनकी पीड़ा दूर करने के लिए आगे आने को कह रहा है ताकि आप इसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार करो और इन दुखों को दूर करने के लिए जितना कुछ कर सकते हो करो।'' बात जारी रखते हुए बाबा जी ने फरमाया, ''हम मृत्यु और विनाश को न देखें बल्कि प्रयास करें कि सांत्वना लाने के लिए हम क्या कर सकते हैं। बात पीड़ा के बारे में चिन्ता करने की नहीं, बात लोगों की पीड़ा में उनके साथ खड़े होने की है। बात आंसू पोंछने के बारे में नहीं है, बात आंसुओं का दर्द सांझा करने की है।'' पूज्य सुदीक्षा जी बाबा जी के प्रेरक वचनों को सुनकर अब महसूस करने लगीं कि दिव्यता शिकायतों में नहीं है

बल्कि इस बात में है कि हम किस प्रकार परमात्मा की इच्छा को स्वीकार करते हैं।

प्रभु इच्छा के आगे नतमस्तक होने का एक उत्कृष्ट उदाहरण वह घटना है जब सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी और उनके समर्पित भक्त अवनीत सेतिया जी ने 13 मई, 2016 को एक दुर्घटना में नश्वर शरीर त्याग दिया। सम्पूर्ण निरंकारी जगत उस समय गहरे दुख में डूबा हुआ था। पूज्य सुदीक्षा जी के लिए यह एक बड़ी क्षति थी। उन्होंने अपने गुरु और पिता के साथ-साथ अपने जीवन साथी को भी खोया था। इन सबके बावजूद सुदीक्षा जी ने चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों को सहज भाव से लिया और ईश्वरीय निर्णय को पूर्ण विश्वास और नम्रता के साथ स्वीकार किया। उन्होंने स्वयं को संभालने के साथ-साथ दूसरों को भी मजबूती के साथ संभाला।

बाबा हरदेव सिंह जी के निरंकार में लीन होने के बाद सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी महाराज ने सन्त निरंकारी मिशन की बागडोर संभाली और सुदीक्षा जी को दूर-देशों में स्थित मिशन की 220 शाखाओं को संभालने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी, ये शाखाएं दुनियाभर के लगभग 70 देशों में फैली हुई हैं। उन्होंने इस विभाग में अपनी भूमिका खूबसूरती से निभाई। उनकी पहल और समर्थन के फलस्वरूप 30 जून और 1 जुलाई, 2018 को ह्यूस्टन, टैक्सास (अमेरिका) में विशाल निरंकारी आध्यात्मिक शिखर सम्मेलन आयोजित किया गया। इस अवसर पर 'मानव अनन्त प्रतीक' बनाकर एक विश्व रिकॉर्ड निर्मित हुआ और 'गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड' स्थापित किया गया।

पूज्य सुदीक्षा जी ने बच्चों के लिए आध्यात्मिक प्रेरणा कार्यक्रम शुरू किया, जिसे किड्स डिवाइन नाम दिया गया। 23 फरवरी, 2017 को सद्गुरु माता सविन्दर हरदेव जी महाराज द्वारा इस कार्यक्रम को पावन

आशीर्वाद प्रदान किया गया। यह कार्यक्रम निरंकारी मिशन के इतिहास और विचारधारा के साथ बच्चों को जोड़ने में निरन्तर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

15 जुलाई, 2018 को सद्गुरु माता सविन्दर जी ने समर्पित भक्त सुदीक्षा जी को सद्गुरु का दायित्व निभाने को संकेत दिया।

सुदीक्षा जी ने सद्गुरु के पवित्र चरणों में सम्मान से सिर झुकाया और स्वीकारोक्ति में उनके हाथों को अपने हाथों में ले लिया। युवा सुदीक्षा जी सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज बन गई। इसके साथ ही उनकी मुस्कान आशीर्वाद की मुस्कान बन गई; उनकी आंखें सभी को संदेश दे रही थीं कि "मैं हूँ चिन्ता मत करो, अपनी सम्पूर्ण चिन्ताओं का भार मुझे दे दो।" 33 वर्ष की सुदीक्षा जी एक नए रूप में प्रकट हो रही थीं, जो मानव मात्र के प्रति प्रतिबद्ध हैं और हर किसी की चिन्ता सांझा करना चाहती हैं। सद्गुरु माता

सविन्दर हरदेव जी महाराज ने उन्हें 16 जुलाई, 2018 से सन्त निरंकारी मिशन का आध्यात्मिक प्रमुख घोषित किया। पूज्य सुदीक्षा जी ने परम पावन सद्गुरु के रूप में नई जिम्मेदारी को दिव्य आशीर्वाद के रूप में स्वीकार किया। उन्होंने प्रार्थना की और सभी से सामूहिक सहयोग की कामना की ताकि वह सद्गुरु की अपेक्षाओं के अनुसार आरम्भ से अन्त तक हर आवश्यक कदम उठाएं और पूरी मानवता की अत्यन्त विनम्रतापूर्वक सेवा कर सकें।

17 जुलाई को आयोजित विशाल सत्संग समारोह में भक्तों के चेहरों पर जो उत्साह और मुस्कान थी, स्पष्ट रूप से वह आने वाले समय की कहानी कह रही थी। सन्त निरंकारी मिशन के प्रत्येक सदस्य ने अपने सद्गुरु को नए रूप में सम्पूर्ण विश्वास और प्रेमाभक्ति भाव के साथ स्वीकार किया। अपनी विचार प्रक्रिया के बारे में सद्गुरु माता सुदीक्षा जी कहती हैं, ''लोगों में थोड़ा अन्तर है लेकिन उस छोटे से अंतर में भी बड़ा अन्तर होता है। थोड़ा अन्तर उनका रवैया है और बड़ा अन्तर यह है कि यह रवैया सकारात्मक है या नकारात्मक।'' सद्गुरु माता सुदीक्षा जी ने कहा कि यदि शर्ट का पहला बटन सही लगाया गया है तो शेष बटन भी ठीक लगते जाते हैं।

पूज्य रमित चान्दना जी, सद्गुरु माता सुदीक्षा जी के विनम्रभावी जीवन साथी हैं जो पूर्णतया आध्यात्मिकता के प्रति समर्पित हैं। उनका प्रतिबद्ध समर्पण और सहज स्वभाव मिशन के लिए एक अक्षुण पूंजी और शक्ति है। नए युग की शुरुआत में सन्त निरंकारी मिशन शान्तिपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण विश्व की आशा को जीवन्त कर रहा है।

निश्चित है सद्गुरु माता सुदीक्षा जी के पावन मार्गदर्शन में शांति और सद्भाव से युक्त विश्व का निर्माण होगा।

प्रमुख दिवस : अक्टूबर माह

1 अक्टूबर	विश्व वृद्धजन दिवस
2 अक्टूबर	गाँधी जयंती, लाल बहादुर शास्त्री जयंती
3 अक्टूबर	विश्व आवास दिवस
8 अक्टूबर	भारतीय वायुसेना दिवस
9 अक्टूबर	विश्व डाक दिवस
9 से 15 अक्टूबर	राष्ट्रीय डाक सप्ताह
10 अक्टूबर	विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस
10 से 17 अक्टूबर	राष्ट्रीय विधिक सहायता सप्ताह
13 अक्टूबर	विश्व दृष्टि दिवस
14 अक्टूबर	विश्व मानक दिवस
15 अक्टूबर	विश्व ग्रामीण महिला दिवस
16 अक्टूबर	विश्व खाद्य दिवस
17 अक्टूबर	अंतर्राष्ट्रीय गरीबी उन्मूलन दिवस
21. अक्टूबर	विश्व आयोडीन अल्पता विकार निवारण दिवस, आजाद हिन्द फौज का स्थापना दिवस
24. अक्टूबर	संयुक्त राष्ट्र दिवस
27. अक्टूबर	पैदल सेना दिवस
30. अक्टूबर	विश्व मितव्ययता दिवस
31. अक्टूबर	राष्ट्रीय एकता दिवस

– संग्रहकर्ता : ओमसिंह

कहानी : राजकुमार जैन 'राजन'

नदी का घमण्ड

द्वापर युग में एक दिन श्रीकृष्ण जी किसी नदी के पास से गुजर रहे थे कि तभी आवाज आई– भगवन्! आप यमुना में क्रीड़ा करते हैं क्या मुझे चरण छूने का सौभाग्य नहीं देंगे?

श्रीकृष्ण जी सभी को समान रूप से प्यार करते थे। उस नदी की बात सुनकर बोले– तुम ऐसा क्यों सोचती हो? मैं अवश्य तुम्हारे शीतल जल में स्नान करूंगा। कहो तो रोज ही नहाया करूं। मैं तो इधर से जाता ही हूँ।

यह सुनकर नदी फूली नहीं समायी। उसकी लहरें उछालें लेने लगीं। भगवान श्रीकृष्ण रोज उसी नदी में नहाने लगे। उस नदी के समीप आम के वृक्ष पर मोर-मोरनी का एक जोड़ा रहता था। नदी उनकी घनिष्ठ मित्र थी। मोर उसके किनारे पर आकर नाचता था। फिर मोर-मोरनी निर्मल जल पीकर प्यास बुझाते थे।

एक दिन मोर-मोरनी ने जल पीना चाहा तो नदी बोली– जरा ठहरो!

मेरे जल को जूठा न करो। अब मुझ में भगवान स्नान करते हैं। यदि तुम जल पी लोगे तो क्या वे जूठे जल में स्नान करेंगे?

पहले तो मोर को नदी की बात मजाक लगी; पर जब उसे मालूम हुआ कि नदी सच कह रही है तो उसने सोचा 'क्या भगवान को स्नान कराने से नदी

इतनी घमण्डी हो गयी है कि हमें दुत्कार रही है। पानी भी नहीं पीने देती।'

मोर को बहुत दु:ख हुआ। वह श्रीकृष्ण जी के पास पहुँचा। उसने सारी घटना सुनायी। श्रीकृष्ण जी ने मोर से कहा– तुम दु:खी मत होओ। नदी में घमण्ड आ गया है। उसका फल उसे अवश्य मिलेगा। मैं तुम्हें भी उतना ही प्यार करता हूँ। तुम तो बहुत सुन्दर हो। मोर प्रसन्न होकर अपने निवास स्थान पर लौट आया।

दूसरे दिन श्रीकृष्ण जी नदी के तट पर आये। उस दिन उन्होंने नदी में स्नान नहीं किया। नदी बोली– प्रभु! लगता है आज आप मुझ से अप्रसन्न हैं।

श्रीकृष्ण जी ने मुस्कुराते हुए कहा– ऐ चंचल नदी, मैं तभी स्नान करूंगा, जब तुम मेरे मुकुट में लगाने के लिए सुन्दर मोर पंख लाकर दोगी।

सुनकर नदी बड़ी परेशान हुई। अब किस मुँह से मोर से पंख मांगू? मगर कोई चारा नहीं था। उसने गर्व छोड़कर मोर को बुलाया और कहा– मोर भैया, मुझे क्षमा करना। मैंने तुम्हारा दिल दुखाया है।

मोर ने कहा– बोलो क्या बात है? तुम मेरी मित्र हो, मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूंगा।

नदी ने सारी बात बतायी। मोर ने तुरन्त अपना पंख तोड़कर दे दिया।

श्रीकृष्ण जी ने प्रसन्न मुद्रा में नदी के हाथों से पंख लिया। उसे अपने मुकुट में लगाया और मोर से वरदान मांगने को कहा।

मोर बोला– प्रभु! आपने मेरा पंख अपने मुकुट में लगाकर मुझे जो गौरव दिया है वही सबसे बड़ा वरदान है। अब आप इस नदी में स्नान करें।

–पहले तुम पानी पिओ, तभी मैं स्नान करूंगा।– श्रीकृष्ण जी ने कहा।

नदी का रहा सहा घमण्ड भी चूर हो गया।

भारत ने 18वें एशियन गेम्स में 15 गोल्ड के साथ 69 मेडल जीते

जकार्ता (इंडोनेशिया) । भारतीय खिलाड़ियों ने 18वें एशियन गेम्स में 15 गोल्ड के साथ 69 मेडल जीते। यह हमारा अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। एथलेटिक्स में इस बार सबसे ज्यादा 7 गोल्ड सहित 19 मेडल मिले। हमारे खिलाड़ियों ने सर्वाधिक 18 खेलों में मेडल जीतने के रिकॉर्ड की बराबरी भी की। देश के लिए मेडल जीतने वालों में 15 साल के शूटर शार्दुल विहान से लेकर 60 साल के ब्रिज प्लेयर प्रणब बर्धन तक शामिल रहे। सौरभ चौधरी (15 साल, शूटिंग), मुस्कान किरार (18 साल, आर्चरी), पिंकी बल्हारा (19 साल, कुराश), मालाप्रभा जाधव (19 साल, कुराश), अमन सैनी (21 साल, आर्चरी) जैसे युवाओं ने अच्छे भविष्य की आस जगाई।

एशियाड में पहली बार उन पांच खेलों में भी मेडल जीते जिनमें कभी खाता नहीं खुला था

भारत टेबल टेनिस में 60 साल से एशियन गेम्स में शामिल है लेकिन पहली बार दो ब्रॉन्ज मेडल जीते। 28 साल से सेपक टकरा एवं वुशु खेल रहे हैं। वुशू में 4, सेपक टकरा में 1 ब्रॉन्ज मिला। पहली बार शामिल ब्रिज (ताश का खेल) में एक गोल्ड, 2 ब्रॉन्ज, जबकि कुराश में एक सिल्वर और एक ब्रॉन्ज मिले।

चार कैटेगरी में भी मेडल : विनेश फोगाट को कुश्ती में गोल्ड मिला। वे ऐसा करने वाली पहली महिला खिलाड़ी हैं। एथलेटिक्स के हेप्टाथलॉन में स्वप्ना बर्मन ने पहली बार गोल्ड मेडल जीता। बॉक्सिंग के लाइट फ्लाइवेट कैटेगरी में अमित पंघाल (49 किग्रा) को गोल्ड मिला। महिला बैडमिंटन के सिंगल्स में सिंधु को सिल्वर और साइना को ब्रॉन्ज मिला।

– संकलन : श्रीराम प्रजापति

दादाजी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

पंचतंत्र की कहानी पर आधारित

जैसे को तैसा

एक जंगल में एक आश्रम था। वहाँ एक ऋषि रहते थे। वे जंगल में तप करते थे। ऋषि को पशु पक्षियों से बहुत ही ज्यादा लगाव था।

एक दिन ऋषि के पास एक घायल बिल्ली आ गई। उन्होंने बिल्ली को ठीक कर अपने पास रखना शुरू किया। बिल्ली भी उन्हीं के पास रहकर अपना जीवन व्यतीत कर रही थी।

एक दिन बिल्ली की नज़र एक लोमड़ पर गई, लोमड़ आश्रम के पीछे आकर बिल्ली को मारने आ पहुँचा था। लोमड़ को देखते ही बिल्ली काफ़ी डर चुकी थी क्योंकि पहले भी एक बार बिल्ली को लोमड़ ने अपनी दुश्मनी के कारण घायल किया था।

इस बार लोमड़ को दुबारा देखकर बिल्ली ने सोचा कि आज मेरे जीवन का अंतिम दिन है लेकिन बिल्ली किसी तरह ऋषि के पास पहुँच गई। ऋषि ने बिल्ली को डरे हुए देखा तो उन्होंने उसे बचाने के लिए चूहा बना दिया।

अब चूहा बन जाने के कारण वह किसी न किसी बिल में घुसकर अपना गुजारा कर लेता था।

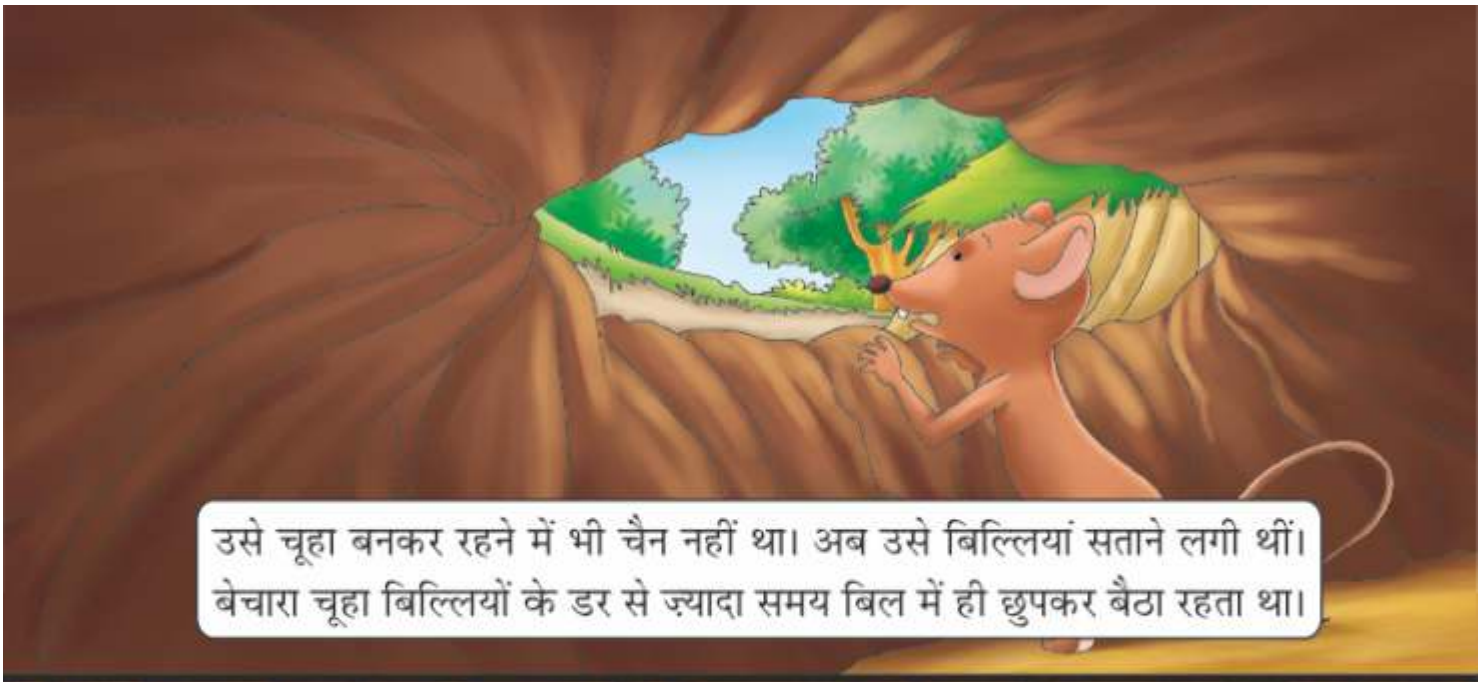
उसे चूहा बनकर रहने में भी चैन नहीं था। अब उसे बिल्लियां सताने लगी थीं। बेचारा चूहा बिल्लियों के डर से ज़्यादा समय बिल में ही छुपकर बैठा रहता था।

जिस कारण चूहे को खाना ठीक ढंग से नहीं मिल पाता था। और न ही वह इधर-उधर घूम पाता था। वह हमेशा बेचैन रहने लगा। जिस कारण चूहा पहले की अपेक्षा बहुत ही कमज़ोर हो गया था।

अब चूहा मरने की स्थिति में पहुँच चुका था। एक दिन ऋषि ने चूहे की ऐसी दशा देखी तो उन्हें उस पर बहुत ज़्यादा ही दया आने लगी।

ऋषि ने चूहे को शान-शौकत से रहने के लिए शेर बना दिया। अब शेर बन जाने के बाद वह सभी जानवरों पर भारी पड़ने लगा सभी उसे सलाम करते। शेर का घमण्ड बहुत बढ़ गया। वह अपने आपको काबू में नहीं रख पाता था।

अचानक एक दिन वह भूख से तड़प रहा था। तबियत खराब हो जाने के कारण वह शिकार करने जंगल नहीं जा सका।

तब शेर की नज़र उसी ऋषि पर पड़ी। ऋषि को खाने के लिए वह पीछे से झपटा। ऋषि उस समय पूजा करने बैठे थे। शेर की दशा देखकर ऋषि की आँखे क्रोध से लाल हो गईं।

ऋषि ने श्राप देकर शेर को पहली अवस्था में ला दिया। अब बेचारी बिल्ली चुपचाप ऋषि के चरणों के पास बैठी रहती थी। वह अपनी गलती को समझ चुकी थी।

शिक्षा: हमें कभी भी अपने हितैषी का अहित नहीं करना चाहिए।

जानकारी : किरण बाला

समुद्री घोड़ा

यह एक विचित्र तरह की मछली है जिसका सिर घोड़े से मिलता-जुलता है लेकिन आदतें मछलियों से सर्वथा भिन्न होती हैं।

यदि इसे नजदीक से देखे तो पाएंगे कि इसका शरीर कड़ा किन्तु चिकना होता है और पूंछ का आकार सर्प जैसा होता है। यद्यपि इसकी आंखें दो ही हैं लेकिन दोनों आंखें स्वतंत्र रूप से काम करती हैं। इसका आकार अधिकतम एक फीट तक होता है।

समुद्री घोड़े की कोई 50 किस्में पाई जाती हैं जो कि प्राय: गर्म समुद्र के किनारे समुद्री घास और छोटे-छोटे पौधों के साथ पूंछ की कुंडली बनाकर चिपका रहता है। वैसे यह केवल गर्मियों में ही दिखाई देता है, सर्दियों में पता नहीं कहाँ चला जाता है।

इस मछली के प्राकृतिक शत्रु बहुत कम हैं। अन्य मछलियां भी इसे खाना पसन्द नहीं करतीं। इन्सान को भी इसका स्वाद रास नहीं आता। इसलिए इसके अस्तित्व को कोई खतरा नहीं है।

कंगारूओं की भांति नर दरियाई घोड़े के पेट पर एक थैली होती है जिसमें मादा अंडे देती है। यहीं अंडों से बच्चे बनते हैं जिनमें करीब डेढ महीने का समय लगता है। इसके बाद नर इन बच्चों को समुद्र में छोड़ देता है।

समुद्री घोड़ा बड़ा चालाक होता है। यह घात लगाकर शिकार पर हमला करता है। पहले तो वह समुद्री घास या पौधों पर बेजान-सा लिपटा रहता है और फिर जैसे ही कोई मछली उसके निकट से गुजरती है वह झपटकर उसे खा जाता है।

समुद्री घोड़े अनेक रंगों में मिलते हैं जैसे सफेद, लाल, नीला, हरा, भूरा आदि। इनका तैरने का ढंग भी मछलियों से थोड़ा अलग है ये सीधा खड़े होकर तैरते हैं। मजे की बात तो यह है कि ये अपने सिर को चाहे जिधर घुमा सकते हैं।

दो बाल कविताएं : सुकीर्ति भटनागर

तारे

हर पल ही मुस्काते हैं,
वे नभ के टिम-टिम तारे।
जगमग-जगमग करते हैं,
कुदरत के वे हरकारे।।

इक दिन चन्दा ने पूछा,
कितने छोटे तुम सारे।
फिर भी सदा चमकते हो,
क्यों तम से न तुम हारे?

तब हँस बोले तारे सब,
मिलजुल रहते हम सारे।
छोटे-छोटे होकर भी,
फैला लेते उजियारे।।

बूंद ओस की

बूंद ओस की पात-पात पर,
कैसी ढुलमुल करती है।
फूल-फूल की पंखुड़ियों में,
मोती का दम भरती है।।

जल के छोटे-छोटे कण सी,
हरी घास पर बिखरी है।
बूंद ओस की सबको भाती,
पावन मन सी निखरी है।।

चंदा के साये में सोती,
सूरज से शर्माती है।
बूंद ओस की कोमल इतनी,
झटपट बिखर ये जाती है।।

क्षण पल के जीवन में अपने,
सबका मन बहलाती है।
खुशियां बांटें हम औरों को,
यही हमें समझाती है।।

प्रेरक-प्रसंग : डॉ. जमनालाल बायती

साधनों का तर्कपूर्ण सही उपयोग

महात्मा गाँधी साधनों के सही उपयोग को लेकर सदैव सजग रहते थे। वे सदैव शान-शौकत एवं दिखावे से दूर रहे, यहाँ तक कि उन्होंने एक बार काम में लेने के बाद बचे हुए पानी को बिखेर देने पर मीराबेन को डांट दिया था– अपनी अप्रसन्नता जताई थी।

बात स्वतंत्रता से पूर्व की सन् 1943 की है। बंगाल में दंगे हो रहे थे। वहाँ की जनता गाँधी जी को बुलाना चाहती थी और गाँधी जी वहाँ जाने को तैयार भी थे। पर रेलवे में आरक्षित डिब्बे मिलने में विलम्ब हो रहा था। यात्रा में अधिक समय लगने के कारण तत्काल आरक्षित डिब्बे मिलने में रेलवे के अधिकारियों ने असमर्थता जाहिर की।

कार्यकर्ताओं ने गाँधी जी तथा उनके साथ जाने वाले साथियों के लिये तृतीय श्रेणी के डिब्बे आरक्षित करवा दिये जिससे कि वे लोग आराम से यात्रा कर सके। नियत समय पर यात्रा आरम्भ हो गई। गाँधी जी ने देखा कि उनके साथी लोग तथा उनका सामान तो एक डिब्बे में ही सुविधाजनक रूप से समा सकता है। उन्होंने यह भी देखा कि अन्य डिब्बों में यात्री जरूरत से ज्यादा भरे हुए हैं, वे कठिनाई से पास-पास बैठकर कष्ट के साथ यात्रा कर रहे हैं।

गाँधी जी ने अपनी यात्रा के प्रबन्धक को बुलाया और कहा कि अपनी यात्रा के साथी तथा उनका सामान एक डिब्बे में ही सुविधा से रखकर बैठ सकते हैं। अपने को एक डिब्बा अन्य यात्रियों के लिए खाली कर देना चाहिए। ऐसा करने से अन्य साथी-यात्री भी सुविधा से यात्रा कर सकेंगे। गाँधी जी से ऐसा सुनते ही प्रभारी यात्री ने कहा कि ..... जी ..... पर रेलवे को किराया तो पहले ही चुका दिया है, वह रुपया तो वापस मिलेगा नहीं ..... और अपनी कठिनाईयां बढ़ सकती हैं।

ऐसा सुनकर गाँधी जी बोले– किराया वापस मिले या न मिले यह महत्वपूर्ण नहीं है। दूसरे डिब्बों में क्षमता से अधिक यात्री बैठे हैं, वे कष्ट पा रहे हैं और हमें जरूरत से ज्यादा जगह घेरने का अधिकार नहीं है, वे भी भारत के ही नागारिक हमारे बन्धु हैं। हमें उन्हें कष्ट में यात्रा करने को मजबूर नहीं करना चाहिये। हमें किराया वापस नहीं मिलेगा– यह कोई तर्क नहीं। हमें अगले स्टेशन पर एक डिब्बा खाली कर देना चाहिये।

हम बंगाल में गरीबी और भूख से पीड़ित लोगों की सेवा करने जा रहे हैं। रेल में इस प्रकार की सुविधाजनक यात्रा करना शोभा नहीं देता, ऐसा करना मानव धर्म नहीं है। आप देख रहे हैं कि अन्य डिब्बों में यात्री कैसे जरूरत से ज्यादा अर्थात् क्षमता से अधिक यात्रा कर रहे हैं। वे कष्ट पाकर यात्रा करने को विवश हैं। इस स्थिति में हमें ज्यादा जगह नहीं घेरना चाहिए, यह मानवता नहीं है।

गाँधी जी का तर्कपूर्ण आग्रह सुनकर सब लोग निरुत्तर थे। अगला स्टेशन आने के पूर्व ही सब सामान एक जगह संग्रह कर, व्यवस्थित कर लिया गया तथा दूसरा डिब्बा खाली कर दिया जिससे अन्य यात्री भी तनिक आराम से यात्रा कर सके।

ऐसा था महात्मा गाँधी का साधनों के तर्कपूर्ण तथा सही उपयोग पर आग्रह।

हँसती दुनिया पढ़ते जाओ।
जीवन में आगे बढ़ते जाओ।।

कहानी : भारतभूषण शुक्ल

चंदन बना कोयला

एक राजा वन भ्रमण के लिए गया। वहाँ वह रास्ता भटक गया। भूख-प्यास से पीड़ित वह एक वनवासी की झोपड़ी पर पहुँचा। वहाँ राजा की बहुत सेवा हुई। वह बहुत प्रसन्न हुआ। दूसरे दिन चलते समय राजा ने उस वनवासी से कहा– हम इस राज्य के शासक हैं। तुम्हारी सज्जनता और सेवा-भाव से प्रभावित होकर राजघराने का चंदनबाग तुम्हें प्रदान करते हैं। उससे तुम्हारा जीवन आनन्द से बीतेगा। राजा ने चंदनबाग वनवासी के नाम कर परवाना लिख दिया।

वनवासी उस परवाने को लेकर राज्य अधिकारी के पास गया और बहुमूल्य चंदन का बाग उसे प्राप्त हो गया।

परन्तु चंदन का क्या महत्व है और उससे किस प्रकार लाभ उठाया जा सकता है, इसकी जानकारी उसे नहीं थी। वनवासी चंदन के वृक्ष काटकर उनका कोयला बनाकर शहर में बेचने लगा। इस प्रकार किसी तरह उसके गुजारे की व्यवस्था चलने लगी।

धीरे-धीरे सभी वृक्ष समाप्त हो गये। एक अन्तिम पेड़ बचा। वर्षा होने के कारण कोयला न बन सका तो उसने लकड़ी बेचने का निश्चय किया। लकड़ी का गट्ठर लेकर जब वह बाजार पहुँचा तो सुगन्ध से प्रभावित लोगों ने उसका भारी मूल्य चुकाया। आश्चर्यचकित वनवासी ने इसका कारण पूछा तो लोगों ने बताया– यह चंदन की लकड़ी है। बहुत मूल्यवान है। यदि तुम्हारे पास ऐसी ही और लकड़ी हो तो उसका ढेर सारा मूल्य प्राप्त कर सकते हो।

वनवासी अपनी नासमझी पर पश्चाताप करने लगा कि उसने इतना बहुमूल्य चंदन की लकड़ी को कौड़ी के भाव कोयला बनाकर बेच दिया।

पछताते हुए उस नासमझ को सांत्वना देते हुए एक विचारशील व्यक्ति ने कहा– मित्र घबराओ मत, यह संसार तुम्हारी ही तरह नासमझ है। जीवन का एक-एक क्षण बहुमूल्य है पर लोग लालच में कौड़ी के रूप में इसे गंवा देते हैं। तुम्हारे पास जो एक वृक्ष बचा है, उसी का सदुपयोग कर लो तो कम नहीं। बहुत गंवाकर भी अन्त में यदि कोई मनुष्य सम्भल जाता है तो वह भी बुद्धिमान ही माना जाता है।

परोपकार का सुख

इंग्लैंड की बात है। उस समय वहाँ का राजा सप्तम एडवर्ड था।

उसकी पत्नी का नाम था– एलेक्जैण्ड्रा। वह विनम्र और मधुर स्वभाव की महिला थी। यही नहीं, मेहनती भी खूब थी। बचपन से ही ये गुण उसमें मौजूद थे। एक क्षण भी फिजूल बर्बाद करना उसे पसन्द नहीं था।

विवाह के बाद उसकी सुख-सुविधा काफी बढ़ गई। प्रत्येक काम के लिए नौकर थे। वह क्या काम करे, यह समस्या उसके सामने उठ खड़ी हुई क्योंकि चुपचाप बैठे रहना उसे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। काफी सोच-विचार के बाद उसे अपने लिए एक काम ढूंढ़ ही निकाला। वह गरीब लोगों को बांटने के लिए कपड़े खुद अपने हाथों से सीया करती और उन्हें बांटने के लिए गरीबों के मौहल्ले में भी खुद ही जाया करती। दरअसल परोपकार के काम से जो आत्मिक सुख मिलता, वह सुख उसे कभी विलास और सुविधा-सामग्री में नहीं मिला।

प्रस्तुति : राधेलाल 'नवचक्र'

दो बाल कविताएं : हरजीत निषाद

सूरज सुबह निकलता है

सूरज सुबह निकलता है,
दिन भर चलता रहता है।
धूप रोशनी देता सबको,
शाम हुई तो ढलता है।।

फसल धूप से पकती है,
रोग बीमारी टलती है।
शुरू साल में अच्छी लगती,
धूप जून में तपती है।।

धूप विटामिन डी देती,
रोग त्वचा के हर लेती।
सागर का पानी लेकर,
बादल वर्षा जल देती है।।

पर्यावरण बचाएंगे,
धूप से न घबराएंगे।
कुदरत का वरदान है ये,
इससे बिजली बनाएंगे।।

स्वभाव फूल जैसा

मुस्कुराते हैं हर हाल में फूल,
भले ही आस पास हों इनके शूल।
हँसते रहना है स्वभाव इनका,
हवाएं बेशक न हों अनुकूल।।

सज्जनों का होता स्वभाव फूल जैसा,
धूप हो या छांव सदा एक जैसा।
खुशी और महक बांटते हैं सदा,
पास आये जो भी कोई भी कैसा।।

स्पर्श करने पर हैं सुख देते,
कांटों की तरह नहीं ये दुःख देते।
नागफनी के तीखे शूलों के बीच,
फूल खुशी खुशी हैं रह लेते।।

जानकारीपूर्ण लेख : कैलाश जैन एडवोकेट

लेसर किरणें : अलादीन का चिराग

विज्ञान के अनेकानेक आविष्कारों में 'लेसर' का आविष्कार बीसवीं सदी की एक अति महत्वपूर्ण उपलब्धि है। लेसर की उपयोगिता सीमातीत है। विज्ञान के अन्य आविष्कारों की भांति जहाँ यह चिकित्सा एवं इंजीनियरिंग के क्षेत्र में एक चमत्कार साबित हुई है, वहीं इसके संहारक और विध्वंसात्मक इस्तेमाल की आशंकाएं भी बहुत व्यापक हैं। वस्तुत: यह बहुत ही सम्भावनाओं से भरा आविष्कार है।

इस्पात की भारी-भरकम चद्दरों को पलभर में छेद देने वाली लेसर मनुष्य की आँख जैसे कोमलतम अंग की शल्य चिकित्सा भी उसी दक्षता से कर पाने में सक्षम है।

'लेसर' नाम अंग्रेजी के 'एल.ए.एस.ई.आर.' (LASER) अक्षरों से बना है, जिसका पूर्ण रूप है 'लाईट एम्प्लीफिकेशन बाई सिटुमलेटेड एमिशन ऑफ रेडियेशन'। इसके सर्वप्रथम आविष्कार का श्रेय अमेरिकी वैज्ञानिक टी.एच. माइमन को जाता है, जिन्होंने 1917 में वैज्ञानिक आइंस्टाइन के द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत को आधार बनाकर यह अजूबा कर दिखाया।

लेसर प्रकाश का ही एक रूप है, किन्तु जहाँ साधारण प्रकाश का निर्माण सात रंगों के मिश्रण से होता है, वहीं लेसर किरणों में केवल एक रंग होता है। साधारण प्रकाश की प्रकृति चारों तरफ फैलने की होती है, जबकि लेसर एक ही दिशा में चलती है और इसकी सारी शक्ति एक पतली धार में संग्रहित हो जाती है, जो कुछ ही मिलीमीटर चौड़ी होती है। यदि लेसर के प्रकाश को एक सेंटीमीटर के दस हजारवें भाग के बराबर स्थान पर केन्द्रित किया जाए तो लेसर-प्रकाश की तीव्रता सूर्य के प्रकाश के मुकाबले लाखों गुना अधिक हो जाती है। पृथ्वी से दो लाख चालीस हजार मील दूर स्थित चन्द्रमा के धरातल पर एक पैनी लेसर किरण समूह को भेजा गया। यह रास्ता उसने मात्र एक सेकिण्ड में तय किया और इस किरण ने चन्द्रमा के लगभग दो वर्ग मील के क्षेत्र को प्रकाशमान कर दिया।

सन् 1960 में टी.एच. माइमन ने कृत्रिम लाल मणि से एक हाथ में पकड़े जा सकने वाला पहला लेसर बनाया। वह रूक-रूककर लाल प्रकाश देता है। इस कृत्रिम लाल मणि की छड़ के दोनों सिरों को चमकदार दर्पण जैसी पॉलिश दे दी जाती है, जिससे एक सिरा तो दर्पण की तरह प्रकाश को पूर्णत: परावर्तित करे तथा दूसरा सिरा आंशिक रूप से पारदर्शक रहे। इस मणि के इर्द-गिर्द एक ट्यूब लगाई जाती है, जिसमें विद्युत-विसर्जन के माध्यम से प्रकाश पैदा किया जाता है। यह सौरमण्डल की सर्वाधिक चमकदार रोशनी होती है तथा एक सेकिण्ड के अल्पसमय में तीस किलोवाट शक्ति की धड़कन उत्पन्न करती है।

कृत्रिम लाल मणि के अलावा अब तक सौ से अधिक पदार्थों में लेसर प्रकाश उत्पन्न करने में सफलता मिल चुकी है। इसमें कांच, प्लास्टिक तथा द्रव व गैसें शामिल हैं। विभिन्न लेसर में आर्गन लेसर, रूबी लेसर, अमोनियम लेसर, कार्बनडाइऑक्साइड लेसर, येग लेसर आदि प्रमुख हैं। लेसर अधिकांशत: गैस लेसर के रूप में ही होती हैं। हिलियम तथा नियोन लेसर से हमें लाल धार प्राप्त होती है। हिलियम केडियम लेसर से नीली और आरमोन इयन लेसर से हरी धार प्राप्त होती है।

लेसर एक बहुआयामी खोज है। यदि हम चिकित्सा के क्षेत्र में लेसर की उपयोगिता को देखें तो पाएंगे कि इस आविष्कार ने सर्जरी के क्षेत्र में सचमुच चमत्कार कर दिखाया है। आँख जैसे नाजुक और जटिल अंग के रोगों की शल्य-चिकित्सा में लेसर किरणों का सफलतापूर्वक उपयोग किया जाने लगा है। आँख के 'रेटिना' के ऑपरेशन में लेसर किरणों की उपयोगिता ने सचमुच क्रांति कर दी है। यह अति-सूक्ष्म और जोखिम भरा ऑपरेशन अब बिना किसी चीर-फाड़ के आसानी से किया जा सकता है। नाक, कान के अंदरूनी भागों में जहाँ सर्जन का चाकू नहीं पहुँच सकता, अब लेसर द्वारा ऑपरेशन की सुविधा उपलब्ध है। इस ऑपरेशन की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसमें खून तक नहीं निकलता क्योंकि हरी लेसर किरणें खून को ऊपर ही जमा देती हैं। इसके अतिरिक्त, दिमाग तथा रीढ़ की हड्डी के ऑपेरशन, आँतों की सर्जरी, प्लास्टिक सर्जरी, कैंसर आदि बीमारियों के उपचार में लेसर का उपयोग हो रहा है। कोलेस्ट्रोल आदि पदार्थों से धमनियों में पैदा हुए अवरोध को भी लेसर किरणों से दूर किया जाता है। किडनी-स्टोन को बिना ऑपरेशन के लेसर किरणों से गला दिया जाता है। लेसर किरणों पर आधारित एक ऐसी छड़ी बनाई गई है, जो नेत्रहीन व्यक्तियों को रास्ता बताती है और उनका मार्गदर्शन करती है। जापान के तोहोकू यूनिवर्सिटी के डॉ. ओरिकासा ने लेसर किरणों द्वारा मूत्राशय की पथरी के ऑपरेशन में कामयाबी हासिल की है। उन्होंने कुत्ते पर इसका परीक्षण किया और उसके मूत्राशय में मौजूद दो सेंटीमीटर व्यास की पथरी को लेसर किरणों द्वारा टुकड़े-टुकड़े कर दिया। यह विधि मनुष्य पर सफलतापूर्वक आजमाई जा चुकी है। लेसर से टुकड़े-टुकड़े हुई पथरी बाद में सहजता से मूत्र-मार्ग से बाहर निकल जाती है और रोगी स्वस्थ हो जाता है। लेसर का इस्तेमाल संचार साधनों में रेडियो-तरंगों के रूप में किया जा रहा है। एक लेसर किरण पर लाखों रेडियो तरंगों को प्रसारित किया जा सकता है।

औद्योगिक क्षेत्र में भी लेसर की उपयोगिता अद्वितीय साबित हुई है। यह धातु को जोड़ने, काटने, छेद करने, टांका लगाने आदि कार्य में प्रयुक्त होती है। यह हवाई जहाज को सही मार्ग पर रखने में भी काम आती है। यह हीरा तथा प्लेटिनम जैसे सख्त व कठोर पदार्थों को काटने व उनमें छिद्र करने का कार्य कुशलता से करती है। आज पुलों तथा गगनचुंबी इमारतों की सीध लेने का कार्य भी लेसर किरणों की मदद से किया जाता है।

अंतरिक्ष अनुसंधान अभियान में भी लेसर का प्रयोग बहुत ही कामयाब रहा है। इससे तारों और ग्रह-नक्षत्रों की दूरी, स्थिति तथा उपलब्ध तत्वों आदि की मात्रा पता लगाने में मदद मिलती है। इसके अलावा मौसम-विज्ञान, भूकम्प की जानकारी, कम्प्यूटर, प्रदूषण नापने, होलोग्राम विधि से त्रिआयामी तकनीक का विकास जैसे न जाने कितने काम लेसर द्वारा किए जा रहे हैं।

लेसर का आविष्कार इतने क्षेत्रों में कारगर सिद्ध हुआ है, जितना कि कोई अन्य आविष्कार नहीं हुआ है। इसके विस्तृत कार्य-क्षेत्र की व्यापकता को देखते हुए कई लोग 'अलादीन का चिराग' के नाम से पुकारते हैं। वास्तव में लेसर ने उन अनेकों आश्चर्यों को साकार कर दिया है, जिन्हें कल तक असम्भव या मात्र कपोल कल्पना माना जाता था। अभी भी लेसर के उपयोग की अनन्त सम्भावनाएं हैं, जिन्हें पूरी करने में दुनियाभर के वैज्ञानिक जी-जान से जुटे हुए हैं।

बाल कहानी : डॉ. दर्शन सिंह आशट

वह कौन था?

एक लड़का था बॉबी। वह सुबह-सुबह सब्जी की रेहड़ी लेकर निकल जाता था। गली-मोहल्लों में वह आवाजें लगाता हुआ सब्जी बेचता। शाम को अपने घर लौटता था। उसे यह काम करते हुए कुछ ही दिन हुए थे। एक दिन जब वह सुबह-सुबह रेहड़ी लेकर घर से निकलने ही वाला था कि उसका सहपाठी चंदन आ गया। वह बॉबी से बोला– आपको आज प्रिंसीपल साहब ने बुलाया है।

बॉबी ने आश्चर्य से पूछा– मुझे? क्यों?

चंदन बोला– ये तो मुझे मालूम नहीं। मुझे तो अंग्रेजी वाली मैडम ने इतना ही बोला था कि मैं आपको यह संदेश दूँ।– यह कहकर चंदन अपने घर की ओर रवाना हो गया।

–कोई बात नहीं। आ जाऊँगा– बॉबी ने कहा और फिर गहरी सोच में पड़ गया। रेहड़ी पर सलीके से सभी सब्जियां लेकर बॉबी गली-मोहल्लों की तरफ निकल पड़ा।

बलतेज बॉबी का गहरा दोस्त था। दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे। बलतेज के पापा का बड़ा कारोबार था। कई बार बलतेज अपने पापा की गाड़ी लेकर बॉबी के पास आ जाता था और उसे शहर में इधर-उधर घुमा लाता था। दूसरी तरफ बॉबी बहुत गरीब परिवार का लड़का था। उनका बड़ा परिवार था। दादा जी अक्सर बीमार रहते थे। बड़ी बहन पोलियो की शिकार थी। किराए के एक छोटे से मकान में वे दिनकटी कर रहे थे। परिवार के निर्वाह का एकमात्र सहारा बॉबी के पापा थे जो रेहड़ी पर सब्जी बेचते थे। कुछ दिन पूर्व वह दुर्घटना का शिकार हो गये। अब वे अस्पताल में अपना इलाज करवा रहे थे। इससे घर पर और संकट आ गया। अब बॉबी ने स्कूल की पढ़ाई छोड़कर घर का खर्चा चलाने के लिए रेहड़ी पर सब्जी बेचनी शुरू कर दी।

बॉबी ने दसवीं की परीक्षा दी हुई थी। जिस दिन उसका परिणाम घोषित हुआ तो सुबह होते ही बलतेज बॉबी के घर अपनी कार पर आया। उसके हाथ में उसी दिन की अखबार थी।

बलतेज बॉबी को मुबारक देते हुए कहने लगा– बॉबी, बहुत-बहुत मुबारक! तुम मैरिट लिस्ट में आए हो। बड़ी बात यह कि पूरे जिले में दूसरे नम्बर पर।

बॉबी ने अखबार में अपना रोल नम्बर और फोटो देखी तो मारे खुशी के उसने इतनी जोर से किलकारी मारनी चाही जिसे सारे मोहल्ले वालों को पता चल जाए कि मेहनत कैसे की जाती है लेकिन ये क्या? वह रोने लगा।

–अरे बॉबी, ये क्या? मैं तो तुम्हारे लिए खुशखबरी लेकर आया हूँ और तुम रोने लगे? यह माजरा मुझे समझ नहीं आया।

बॉबी बलतेज का हाथ पकड़कर बोला– अब तुम्हारा और मेरा साथ छूट जायेगा।

बलतेज ने हैरानी से पूछा– क्यों?

बॉबी ने जवाब दिया– बलतेज, तुम तो मेरे घर की हालत को अच्छी तरह से जानते हो। मैंने रेहड़ी लेकर सब्जी बेचनी शुरू कर दी है।

बलतेज ने उत्सुकता से पूछा– इसका मतलब अब तुम रेहड़ी पर सब्जी बेचने के लिए जाया करोगे।

–अब स्कूल में नये सिरे से दाखिला होगा, फीस, किताबें-कापियां, यूनिफॉर्म। दस हजार से कम खर्च नहीं होगा। इतने पैसे कहाँ से आयेंगे। अब घर के खर्चे कैसे पूरे होंगे।

यह सुनकार बलतेज ने एक लम्बी सांस ली और बोला– 'अच्छा!' फिर उसे धैर्य देकर अपने घर आ गया।

बलतेज के भी दसवीं कक्षा में अच्छे अंक आए थे।

शाम को जब सारा परिवार खाना खा चुका तो बलतेज अपने पिता जी से बोला– पापा, आपके बेटे ने अस्सी प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। इसलिए आप मुझे कोई गिफ्ट नहीं दोगे?

–जरूर मिलेगा बेटा, बोलो क्या चाहिए?

मौका सम्भालता हुआ बलतेज बोला– मुझे दस हजार रुपये चाहिए।

–दस हजार? लेकिन किसलिए?– पापा ने पूछा।

इस बार पापा की बात का जवाब देने की बजाए बलतेज ने एक और सवाल कर दिया– अच्छा पापा, पहले ये बताओ कि मेरा सबसे गहरा मित्र कौन है?

''अ... अं...।'' पापा ने कुछ सोचने के बाद कहा– बॉबी।

बलतेज एकदम बोला– पापा, ठीक कहा आपने।

–आपको एक और बात भी पता है?– बलतेज ने फिर पूछा।

पापा ने अनभिज्ञता प्रकट करते हुए कहा– नहीं तो।

–वो यह कि बॉबी पूरे जिले में दूसरे स्थान पर आया है। लेकिन दु:ख की बात यह है कि अब घर का खर्च चलाने के लिए बॉबी को स्कूल छोड़ना पड़ रहा है क्योंकि स्कूल की फीस, कापियां, किताबें और यूनिफॉर्म खरीदने के लिए उसके पास पैसे नहीं हैं। मैं नहीं चाहता कि गरीबी मेरे दोस्त का भविष्य बर्बाद करके रख दे।

यह सुनते ही बलतेज के पापा एकदम बोले– मैं तेरी पहेली समझ गया हूँ। ये दस हजार रुपये तुम बॉबी के घरवालों को देना चाहते हो?

बलतेज ने कहा– नहीं पापा, उसके घरवालों को नहीं, केवल बॉबी को। मैं चाहता हूँ कि हम बॉबी के दस हजार रुपये अपनी तरफ से स्कूल में एडवांस जमा करवा दें। इन पैसों से उसके सारे साल की फीस का भुगतान भी होता रहेगा। उसकी कापियां-किताबें भी आ जायेंगी और यूनिफॉर्म का प्रबन्ध भी स्कूल से हो जायेगा।

पापा सहमत हो गये।

–पापा, मेरी एक शर्त और है।– बलतेज ने कहा।

अब कुछ और हैरानी और उत्सुकता से पापा ने पूछा– और कौन-सी शर्त है वो भी बता दो।

वो यह कि जब आप प्रिंसीपल साहब को बॉबी के लिये रुपये जमा करवाएंगे तो प्रिंसीपल साहब से यह जरूर बोल देना कि यह बात बॉबी को पता नहीं चलना चाहिए कि उसके लिए पैसे कौन जमा करवा गया है।

पापा बोले– ठीक है।

अगले दिन पापा बॉबी के पूरे साल की फीस, कापियां-किताबें और यूनिफॉर्म के पैसे एडवांस जमा करवा आए।

प्रिंसीपल साहब ने बॉबी को दूसरी बार संदेश भिजवाया।

जब बॉबी स्कूल में पहुँचा तो प्रिंसीपल साहब ने उसे मेरिट में आने की बधाई दी, उसका मुँह मीठा करवाया और कहा कि उसे पढ़ाई का खर्चा नहीं देना पड़ेगा। कोई नेकदिल व्यक्ति अपनी तरफ से उसकी फीस भरवा गया है।

जब स्कूल में बॉबी बलतेज से मिला तो बलतेज उसे बिल्कुल अनजान-सा बनकर मिला। लेकिन बॉबी ने बलतेज का हाथ पकड़ लिया और बोला– बलतेज, मैं सब जान गया हूँ। तुम्हारा ऋण कैसे उतारूंगा?– यह कहते हुए बॉबी की आँखों में आंसू टपक पड़े।

संग्रहकर्ता : सुभाष पांचाल (पावला)

अनमोल वचन

★ बल तो निर्भयता में है, शरीर में ताकत बढ़ जाने से नहीं।

★ ईश्वर सर्वशक्तिमान है उसकी दया उसकी अच्छाई तथा उसके न्याय का पार नहीं है। उसके अनुयायी नीतिमार्ग का परित्याग कर ही नहीं सकते। – महात्मा गाँधी

★ समस्त भय व चिन्ता इच्छाओं का परिणाम है।
– स्वामी रामतीर्थ

★ धूल से तुच्छ कौन होगा, मगर वह भी तिरस्कार सहन नहीं करती। लात मारे तो सिर पर चढ़ती है। – महर्षि बाल्मीकि

★ कर्म वह दर्पण है, जो हमारा स्वरूप हमें दिखा देता है, अत: हमें कर्म का एहसानमन्द होना चाहिए। – विनोबा भावे

★ चन्द्रमा अपना प्रकाश सारे आकाश में फैलाता है परन्तु कलंक अपने भीतर रखता है।
– रवीन्द्रनाथ टैगोर

★ यदि आप चाहते हो कि अच्छे लोग तुमसे घृणा न करें तो शिष्टाचार के नियमों का सावधानी से पालन करो। – स्वामी शरणानन्द जी

★ जो कार्य आपके सामने है उसे शीघ्रता एवं निष्कपट भाव से करना ही कर्तव्य है। यही आपके अधिकार की पूर्ति है। – गेटे

★ अपनी भूल को स्वीकार करने में जो गौरव है वह अन्याय को चिरायु रखने में नहीं। – प्रेमचन्द

★ जब-जब हम गिरते हैं हमें आगे चलने का तजुर्बा हो जाता है। – सुकरात

★ लोभी मनुष्य की कामना कभी पूर्ण नहीं होती।
– वेदव्यास

★ क्रोध की अवस्था में दस बार सोचकर बोलो।
– डॉ. राजेन्द्रप्रसाद

★ किताबी ज्ञान से अधिक जरूरी है आध्यात्मिक ज्ञान। – फ्रैंसिस बेकन

★ आलस्य छोड़िए और बेकार मत बैठिये क्योंकि हर समय काम करने वाला अपनी इन्द्रियों को आसानी से वश में कर लेता है।
– सरदार वल्लभभाई पटेल

★ जिस तरह जौहरी ही असली हीरे की पहचान कर सकता है, उसी तरह ही गुणी ही गुणवान की पहचान कर सकता है। – सन्त कबीर

★ जिस प्रकार आँखों को देखने के लिए रोशनी की जरूरत होती है, उसी प्रकार हमारे दिमाग को समझने के लिए विचारों की जरूरत होती है।
– नेपोलियन हिल

★ शक्ति और शान्ति के सामने मुसीबत धुएं के समान उड़ जाती है।

★ अपनी गलती को मान लेना महान गुण है।

★ जो समय बर्बाद करता है, समय उसे बर्बाद कर देता है।

★ परोपकार से बढ़कर कोई अच्छा काम नहीं।

★ परिश्रम वह चाबी है जो मुश्किलों के ताले को खोल देती है।

★ असफलता का अर्थ है कि सफलता के लिये सही तौर पर प्रयास नहीं किया गया। – अज्ञात

जानकारी : डॉ. विनोद गुप्ता

ऊंट की खूबियां

ऊंट को रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है। अन्य पशुओं की तुलना में इसकी बनावट थोड़ी विचित्र होती है। यही कारण है कि इसकी चाल बेढंगी होती है। इसमें अनेक खूबियां हैं, जो अन्य जानवरों में नहीं।

भारत में ऊंटों की अनेक प्रजातियां हैं जिनमें मैया, साडा, जाखेड़ा, जाखी, कहरल, साढा जाकेंडी, ओढारू, टोटिया आदि नाम प्रचलित हैं। नस्लों में बीकानेरी, जैसलमेरी, मेवाड़ी और कच्छी प्रमुख हैं।

ऊंट की नस्ल का पता कुबड़ों की संख्या से चलता है। एक कुबड़ वाले ऊंट अरेबियन और दो कुबड़ वाले बैक्ट्रियन होते हैं।

ऊंट की नाक, कान और आंख की बनावट ऐसी होती है जिस पर रेगिस्तानी धूल का विशेष प्रभाव नहीं पड़ता।

ऊंट की पीठ पर कुबड़ होता है जो वास्तव में चर्बी का भंडार होता है। इसमें जमा चर्बी को वह ऊर्जा के रूप में भोजन की कमी के दौरान प्रयोग में लाता है। कुबड़ में जमा चर्बी और थैली में जमा पानी के भरोसे ही वह रेगिस्तान में बिना भोजन-पानी के कई दिन रह लेता है।

यात्रा करके लौटने पर ऊंट का कुबड़ ढीला हो चुका होता है क्योंकि उसमें जमा चर्बी समाप्त हो चुकी होती है।

यह कई दिन के लिए राशन पानी एक ही बार में अपने शरीर में जमा कर लेता है।

लम्बी यात्रा पर जाने से पहले ऊंट ढेर सारा पानी पी लेता है। ये सारा पानी उसके पेट की थैलियों में भर जाता है जो संख्या में बहुत होती हैं और फिर धीरे-धीरे एक-एक थैली खर्च होती रहती है।

आज भी रेगिस्तानों और रेतीले क्षेत्रों में सवारी और बोझा ढोने में ऊंट महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

ऊंटों के बालों की कटाई होली के समय गर्मियों से पूर्व होती है। एक ऊंट के बालों की कटाई से करीब 700 ग्राम ऊन मिलता है। बालों की कटाई के दौरान कोरनी से आकर्षक आकृतियां बनाकर ऊंटों को सजाने की होड़ रहती है।

बीकानेर का ऊंट नृत्य विश्व में प्रसिद्ध हैं। हर वर्ष बीकानेर में ऊंटों का नृत्य और विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित होती हैं। बीकानेर के अलावा ऊंट दौड़ जैसलमेर में भी होती है।

बीएसएफ और सेना में ऊंटों की महत्वपूर्ण भूमिका है। गणतंत्र दिवस की परेड में इन्हें शामिल किया जाता है। कहा जाता है कि बीकानेर रियासत में ढाई हजार ऊंटों की सेना थी। इसे गंगा रिसाला के नाम से जाना जाता था।

ऊंटनी का दूध पोषक तथा स्वास्थ्यवर्द्धक होता है। इसे मधुमेह तथा क्षयरोगियों के लिए लाभदायक माना जाता है। इसके दूध से तरह-तरह की मिठाईयां और व्यंजन भी बनाए जाते हैं। इसके अलावा आइसक्रीम और चॉकलेट भी बनाई जाती है।

ऊंट की ऊन के भी विविध उपयोग हैं। इससे जैकेट, टोपी, खेसला, कम्बल, आसन और अन्य सामान बनाया जाता है।

ऊंट की मृत्यु के पश्चात उसका चमड़ा भी काम आता है। इसके चमड़े से जूते, जैकेट, पर्स, बेल्ट आदि बनते हैं। यही नहीं, इसकी हड्डियों से भी अनेक कलात्मक वस्तुएं बनाई जाती हैं।

ऊंट एक शाकाहारी जीव है जिसका मुख्य भोजन पेड़ की पत्तियां हैं।

कविता : डॉ. परशुराम शुक्ल

विजयदशमी (दशहरा) पर विशेष

विजय पर्व

मानवता की रक्षा करने,
राम धरा पर आये।
मर्यादा पुरुषोत्तम बनकर,
सारे जग में छाये।।

दैत्यराज लंकापति रावण,
इसी काल में आया।
कर विध्वंस धरा पर उसने,
हाहाकार मचाया।।

मारा ऋषियों मुनियों को भी,
अकल गयी थी मारी।
हर सीता को कर ली उसने,
मिटने की तैयारी।।

लौटा दो सीता माता को,
यह सबने समझाया।
अन्त बुरा है बुरे काम का,
सबने उसे बताया।।

शक्ति और सत्ता का स्वामी,
मानवता क्या जाने?
मानवता की परमशक्ति को,
पापी क्या पहचाने।

रावण के सर पर सवार था,
विकट काल का साया।
युद्ध भूमि में आकर पापी,
राघव से टकराया।।

घोर युद्ध फिर शुरू हो गया,
राम और रावण में।
लगा प्रलय होने वाली है,
अभी किसी भी क्षण में।।

दिव्य शस्त्र सब व्यर्थ कर दिये,
रावण बड़ा निराला।
तब राघव ने अग्निबाण से,
उसका वध कर डाला।।

मानवता के सम्मुख कोई,
कभी नहीं टिक पाता।
जो टकराता मानवता से,
निज अस्तित्व मिटाता।।

राम और रावण का जग में,
नहीं दूर का नाता।
राम मारते जब रावण को,
विजय पर्व कहलाता।।

बाल कविता : कीर्ति श्रीवास्तव

चिड़िया

चिड़िया चहक-चहक कर कहती,
सुबह-शाम मैं गगन में रहती।
कब तक मैं अब उड़ पाऊंगी,
प्रदूषित हवा नहीं सह पाऊंगी।।

दम घुटता है अब तो मेरा,
दे दो अब तो सुखद सवेरा।
तभी तुम्हारा आंगन चहकेगा,
चमन भी खुशबू से महकेगा।।

पेड़ खूब लगाना होगा,
चिड़ियों को बचाना होगा।
घोंसला तभी बना पाऊंगी,
बच्चों को भी बचा पाऊंगी।।

बालगीत : राजेन्द्र निशेश

नन्हीं चिड़िया

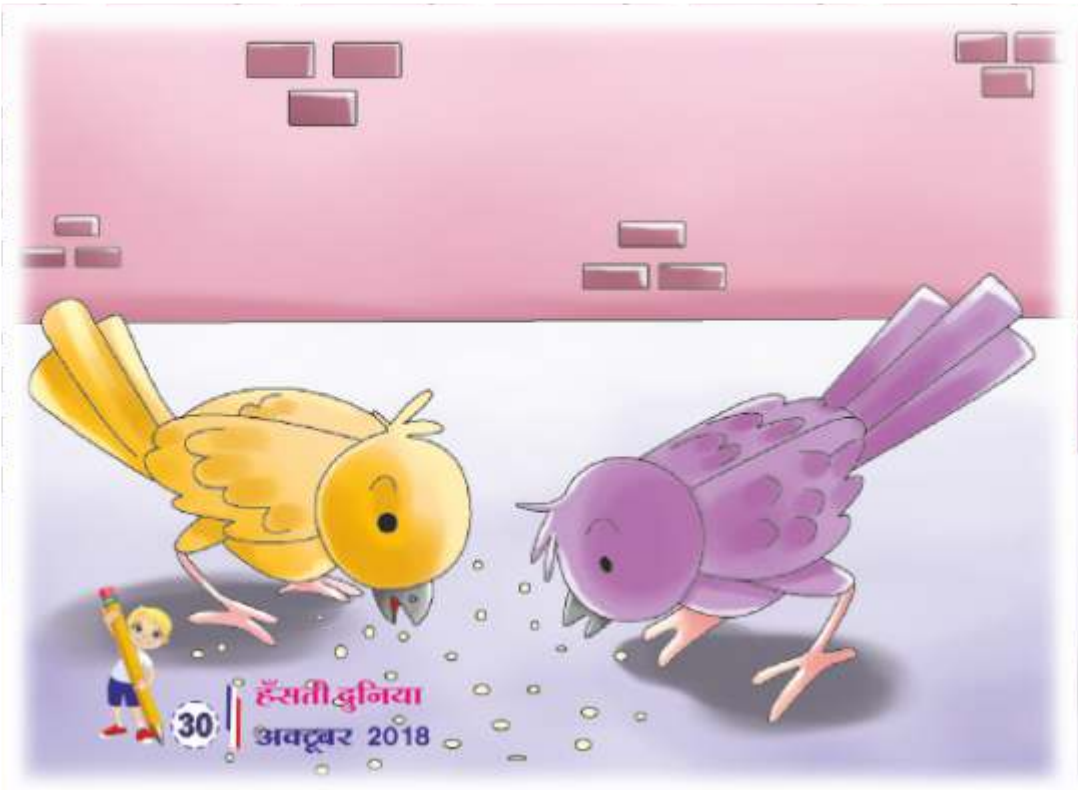

नन्ही सी इक चिड़िया,
आंगन में है आती।
देखते ही बाजरा,
झटपट से खा जाती।।

बंधी रस्सी पर बैठ,
झूला कभी बनाती।
मस्ती छा जाने पर,
मीठे सुर में गाती।।

नन्ही सी इक चिड़िया,
आंगन में है आती।
मन में जब भी आता,
फुर्र से वह उड़ जाती।।

कहानी : अशोक जैन

चौथे सेवक की बुद्धिमानी

एक था राजा। उसने एक बार अपने चार सेवकों को घोड़ा खरीदने भेजा। उस जमाने में अरब के घोड़े काफी अच्छी नस्ल के समझे जाते थे। चारों सेवक बियाबान जंगल और कठिन रास्तों को पार कर अरब गये और उन्होंने वहाँ से एक अच्छा-सा घोड़ा खरीद लिया। जब वे वापस घर लौट रहे थे, तो जिस-जिस शहर से गुजरे लोगों ने घोड़े को बहुत पसन्द किया। कुछ लोगों ने तो घोड़े की इतनी कीमत देनी चाही, जो उसकी खरीद से कई गुना अधिक थी।

कुछ समय तक तो वे घोड़े को खरीदने वाले लोगों को टालते रहे, मगर जब उनके पास रुपयों की कमी होने लगी और घोड़े की कीमत बढ़ती गयी तो चारों ने आपस में सलाह-मशविरा कर घोड़े को अंततः अच्छे दामों पर बेच ही दिया। जब वे खाली हाथ राजा के पास गये तो उन्होंने राजा के दण्ड से बचने के लिए जो योजना बनायी थी, उस पर अमल किया। यानी राजधानी में दाखिल होते ही उन्होंने रोना-पीटना आरम्भ कर दिया।

राजा ने पूछा– आखिर माजरा क्या है? तुम रो क्यों रहे हो, घोड़ा कहाँ है?

चारों ने बताया– महाराज! जब हम घोड़े को लेकर आ रहे थे तो बियाबान जंगल में हमें डाकू मिल गये। उन्होंने हमें पेड़ों से बांध दिया और घोड़ा लेकर चलते बने। बड़ी मुश्किल से जान बचाकर हम लोग वापस लौटे हैं।

राजा ने इन चारों की बात पर यकीन तो नहीं किया परन्तु उसने कहा– अच्छी बात है अभी तो आराम करो कल बात करेंगे।

अगले दिन सेवकों की सच्चाई परखने के लिए राजा ने सबसे पहले एक सेवक को बुलवाया

और बड़े प्यार से उससे पूछा– चलो भाई, घोड़ा गया सो गया। अब यह बताओ कि वह था कैसा और किस रंग का था?

कुछ देर तो वह सकपकाया और फिर जान बचाने की खातिर बोला– महाराज! घोड़ा बहुत गठीले बदन का था, उसकी दुलकी चाल थी, बड़ी सुन्दर अयाल थी।

राजा बोला– सो तो थी, मगर उसका रंग कैसा था?

सेवक बोला– महाराज, उसका रंग सफेद था।

राजा ने कहा– अच्छा, अब तुम यहीं बैठो।

इसके बाद राजा ने दूसरे सेवक को बुलवाया और उससे भी यही सवाल किया। उस सेवक ने बताया– महाराज, घोड़े का रंग मुश्की था।

राजा के हुक्म से तीसरे सेवक को हाजिर किया गया। उसने घोड़े का रंग भूरा बताया।

सबसे आखिर में चौथे व खास सेवक को बुलवाया गया। उसने आते ही शेष तीनों सेवकों के चेहरों पर नजर डाली और उनके बदहवास चेहरों पर उड़ती हवाइयां देखकर वह भाप गया कि दाल में जरूर कुछ काला है। खैर! उस चौथे सेवक के सामने भी वही प्रश्न दोहराया गया कि उस घोड़े का रंग कौन-सा था?

प्रश्न सुनते ही चौथा सेवक एकदम समझ गया कि यही सवाल पहले उसके तीनों साथियों से भी पूछा गया होगा और कोई जरूरी नहीं कि तीनों ने ही घोड़े का एक रंग ही बताया हो। चौथा सेवक अपने स्वर में गहरी उदासी घोलते हुए बोला– क्या अर्ज करूं हुजूर? वह तो बड़ा बेमिसाल घोड़ा था, उसकी एक अद्‌भुत खासियत की खातिर ही तो हमने उसकी इतनी कीमत अदा की थी। हुजूर मुझे दुःख केवल इसी बात का है कि वह नायाब चीज आपको दिखाये बगैर उन बेरहमी डाकुओं ने लूट ली।

राजा की जिज्ञासा बढ़ी आखिर ऐसी क्या बात थी उस घोड़े में?

अब चौथा सेवक घोड़े की विशेषताओं का बयान करते हुए बोला– हुजूर, वह अद्‌भुत घोड़ा पल-पल में रंग बदलता था, कभी वह दूध की तरह सफेद हो जाता तो कुछ देर में वह मुश्की रंग का हो जाता और देखते ही देखते भूरा हो जाता।

हालांकि राजा अपने सेवकों के झूठ बोलने व मक्कारी पर नाराज तो बहुत था, लेकिन वह मन ही मन चौथे सेवक की चतुराई और बुद्धिमानी पर मुग्ध हो उठा। उसने अपने सेवकों को सम्बोधित करते हुए कहा– तुम लोगों ने झूठ बोलकर बहुत ही निन्दनीय कार्य किया है और उसका दण्ड तुम्हें मिलना चाहिए, किन्तु मैं मुख्य सेवक की बुद्धिमानी से प्रभावित हूँ और इसी कारण आज तुम्हें क्षमा करता हूँ।

–मुश्किल समय में भी जो अपनी बुद्धि को जाग्रत और चेतन रखता है वह सभी बाधाओं से पार हो जाता है।

दो बाल कविताएं : राजकुमार जैन 'राजन'

ऐसा काम न करना

हँसना और हँसाना अपना,
जीवन का आदर्श हो।
देश हित मर मिटें हम,
चाहे जितना संघर्ष हो।।

दीन-दुखियों की करें सेवा,
मानवता का कल्याण करें।
उच्च आदर्शों पर चलें सदा,
राष्ट्र का उत्थान करें।।

ऐसा काम कभी न करना,
अपना जिससे मान घटे।
महापुरुषों की वाणी से,
कभी न हमारा ध्यान हटे।।

बुरी आदतों को न अपनाएं,
सदा जगत में आदर पाएं।
बुजुर्गों की सेवा करके,
उनका स्नेह संबल पाएं।।

शहर से अच्छा गाँव

प्यारा अपना गाँव जहाँ पर,
खुश है हर बूढ़ा और बच्चा।
कोलाहल से दूर हमारा,
गाँव शहर से कितना अच्छा।।

जात-पात मजहब का झगड़ा,
नहीं कभी यहाँ होता है।
कृत्रिम जीवन की भारी गठरी,
कोई नहीं यहाँ पर ढोता है।।

नीम तले छप्पर के नीचे,
सब मिल भाई रहते हैं।
बामन, बनिया, दर्जी, मोमिन,
एक साथ ही सब बसते हैं।।

किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन
अजय कालड़ा

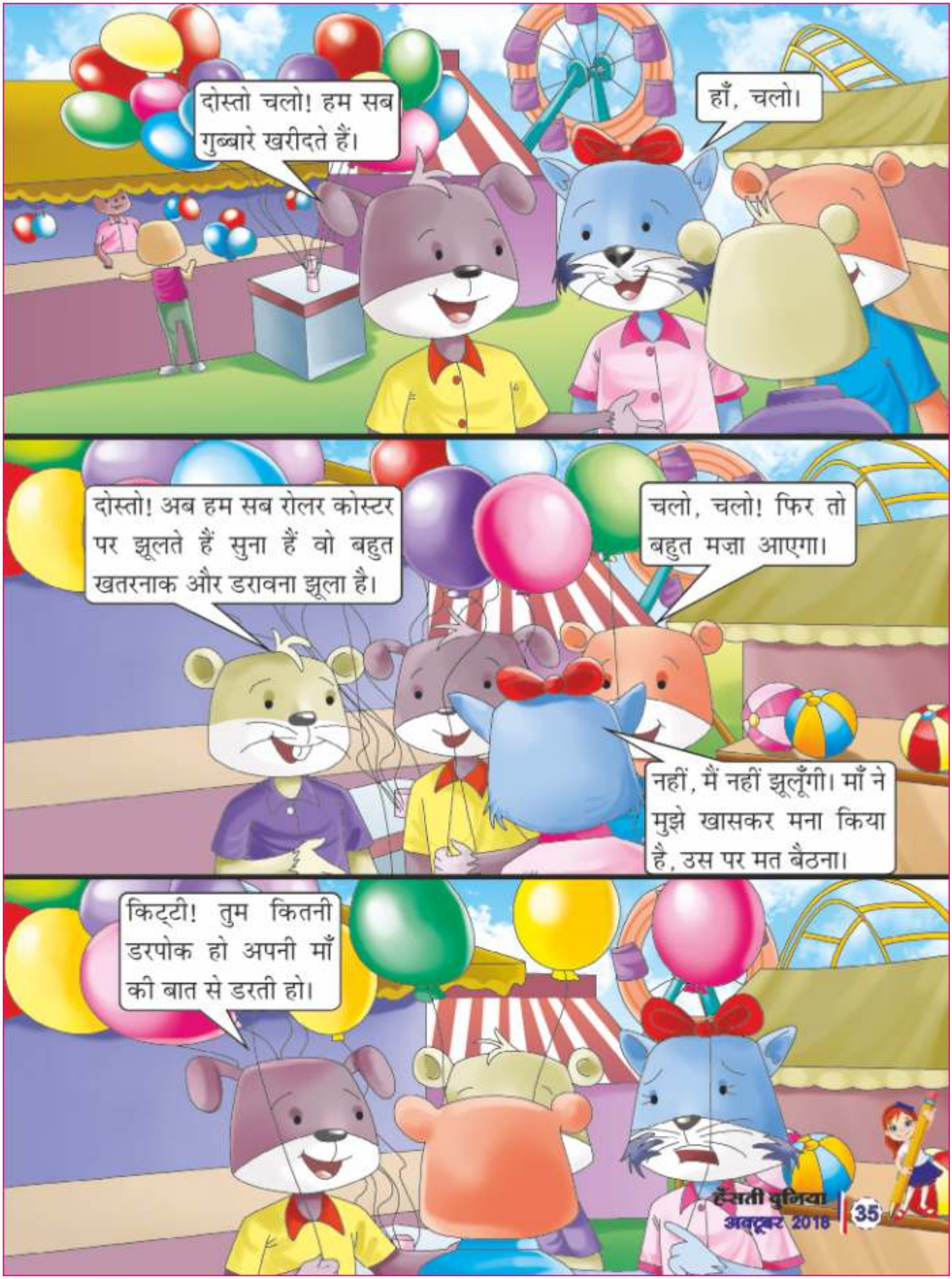
दोस्तो चलो! हम सब गुब्बारे खरीदते हैं।
हाँ, चलो।
दोस्तो! अब हम सब रोलर कोस्टर पर झूलते हैं सुना हैं वो बहुत खतरनाक और डरावना झूला है।
चलो, चलो! फिर तो बहुत मज़ा आएगा।
नहीं, मैं नहीं झूलूँगी। माँ ने मुझे खासकर मना किया है, उस पर मत बैठना।
किट्टी! तुम कितनी डरपोक हो अपनी माँ की बात से डरती हो।

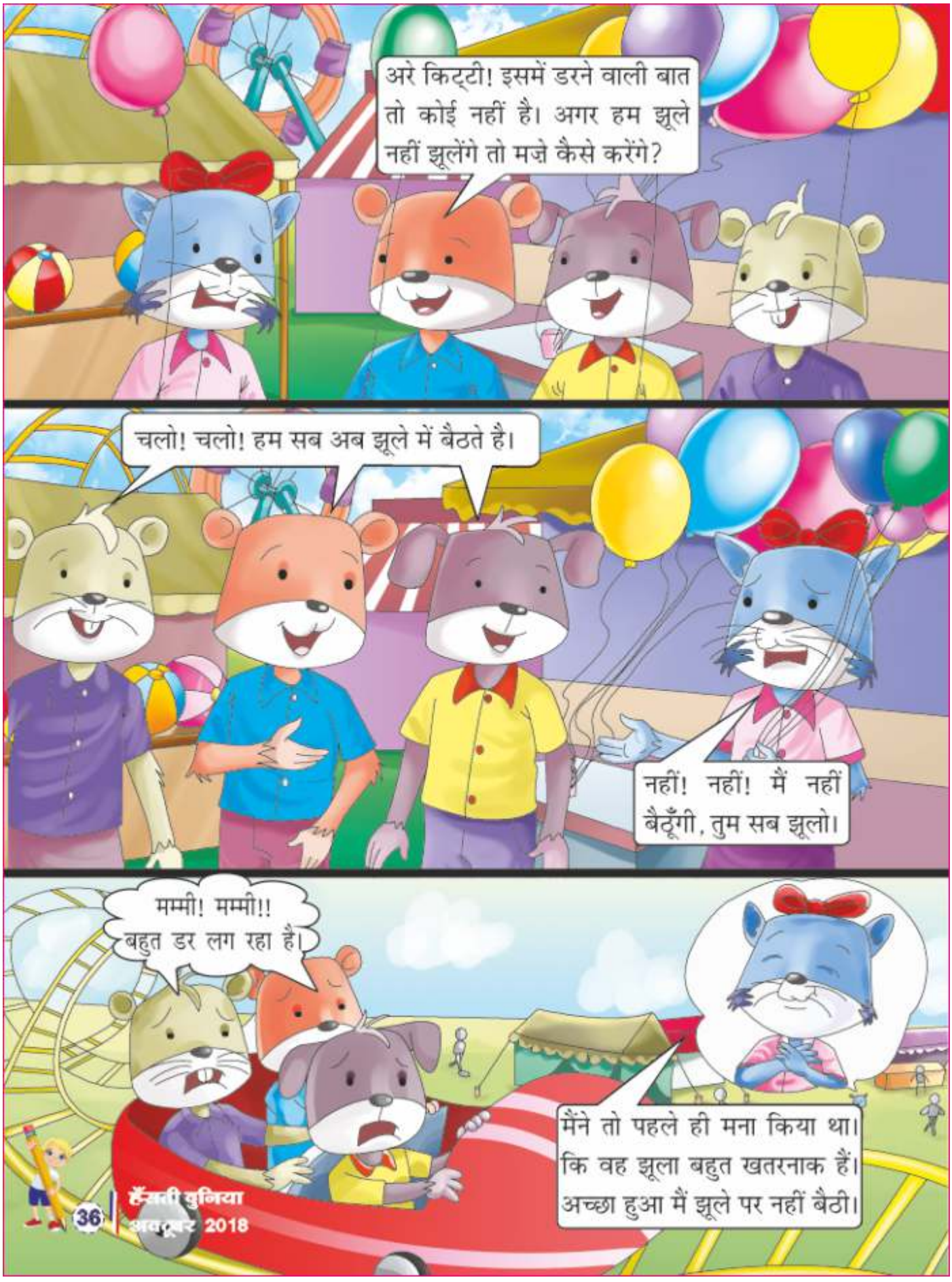

अरे किट्टी! इसमें डरने वाली बात तो कोई नहीं है। अगर हम झूले नहीं झूलेंगे तो मज़े कैसे करेंगे?
चलो! चलो! हम सब अब झूले में बैठते है।
नहीं! नहीं! मैं नहीं बैठूँगी, तुम सब झूलो।
मम्मी! मम्मी!! बहुत डर लग रहा है।
मैंने तो पहले ही मना किया था। कि वह झूला बहुत खतरनाक हैं। अच्छा हुआ मैं झूले पर नहीं बैठी।

माँ जैसा आपने कहा था मैंने वैसा ही किया। मैं रोलरकोस्टर झूले पर नहीं झूली और नीचे खड़ी रहीं।

काश! हमने भी किट्टी की बात मान ली होती तो डर के कारण हमारी तबीयत भी खराब नहीं होती और मेले का भी खूब आनन्द लेते।

संग्रहकर्ता : विभा वर्मा (वाराणसी)

कभी न भूलो

★ उत्तम शिक्षा कहीं से भी मिले तो लेने में संकोच नहीं करना चाहिए। – चाणक्य

★ प्रेम की शक्ति घृणा की शक्ति की अपेक्षा अनन्त गुणी अधिक प्रभावशाली है। – स्वामी विवेकानन्द

★ कर्म, ज्ञान और भक्ति इन तीनों का जिस जगह ऐक्य होता है वही श्रेष्ठ पुरुषार्थ है। – अरविन्द घोष

★ विद्वानों की संगति से ज्ञान मिलता है, ज्ञान से विनय, विनय से प्रेम और लोग प्रेम से क्या नहीं प्राप्त कर सकते। – साहित्य दर्पण

★ बुराई के सामने झुकना कायरता है। – सुभाष चन्द्र बोस

★ दूसरों के अनुभवों से लाभ उठाने वाला बुद्धिमान होता है। – पं. जवाहर लाल नेहरु

★ संसार में कोई भी ऐसा नहीं है जो नीति का जानकार नहीं है। किन्तु उसके प्रयोग से लोग विहीन होते हैं। – कल्हण

★ दुनिया में सबकुछ दोबारा मिल सकता है पर माँ-बाप नहीं मिलते।

★ अन्याय सहने वालों की अपेक्षा अन्याय करने वाला अधिक दुखी होता है। – सिसरो

★ जो अपने हिस्से का काम किए बिना ही भोजन पाते हैं वे चोर हैं। – महात्मा गाँधी

★ वह वीर नहीं है जो हजारों को जीतता है, वीर वह है जो मन को जीतता है। – गौतम बद्धु

★ मनुष्य उतना ही महान होगा जितना वह अपनी आत्मा में सत्य, त्याग, दया, प्रेम और शान्ति का विकास करेगा। – स्वेट मार्डेन

★ सच्चा प्रयास कभी निष्फल नहीं होता। – चिल्सन

★ अपने आप को वश में रखने से ही पूर्ण मनुष्यत्व प्राप्त होता है। – हार्ट स्वेन्शर

★ प्रकृति अपरिमित ज्ञान का भण्डार है, पत्ते-पत्ते में शिक्षापूर्ण पाठ है परन्तु उनसे लाभ उठाने के लिए अनुभव आवश्यक है। – हरिऔध

★ असहाय अवस्था में प्रार्थना के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। – जयशंकर प्रसाद

★ जो वाणी मनुष्य को मनुष्य से जोड़े, मनुष्य के दिल में दूसरे के लिए प्यार, भाईचारा और नम्रता की भावनाएं उजागर करे, वही सही वाणी है। – ऋग्वेद

★ जहाँ नम्रता से काम निकल आए, वहाँ उग्रता नहीं दिखाना चाहिए। – प्रेमचन्द

★ कभी न गिरने में गौरव नहीं बल्कि गौरव तो गिरकर फिर उठने में है।

★ तुम किसी को एक बार मूर्ख बना सकते हो। बार-बार नहीं।

★ बुद्धिमान आदमी बोलने से पहले सोचता है परन्तु मूर्ख बोलने के पश्चात्।

★ मनुष्य जैसी संगत में रहेगा, वह वैसा ही बन जायेगा।

★ घृणा पाप से करनी चाहिये, पापी से नहीं।

★ याद रखो कि बीता हुआ समय लौटकर नहीं आता।

★ जो जैसा बोयेगा वैसा ही काटेगा।

★ विद्या मनुष्य का तीसरा नेत्र होती है। – अज्ञात

कहानी : डॉ. मन्तोष भट्टाचार्य

दोषी कौन?

बहुत दिनों पहले की बात है। आदेगांव नामक राज्य में सतेन्द्र सिंह नाम के एक राजा राज्य किया करते थे। उनकी पत्नी का नाम रानी अभिलाषा देवी था। राजा सतेन्द्र सिंह बहुत ही मधुर भाषी, न्यायप्रिय और शान्त स्वभाव के थे। उन्होंने अपने राज्यमंत्री नागोत्रा को यह आदेश दे रखा था कि प्रजा को कभी कोई कष्ट न होने पाए, राज्य में प्रजा के सुख-दुख की जानकारी से हमेशा हमें अवगत कराया जाना चाहिए। चूंकि राजा की कोई सन्तान नहीं थी इसलिए वे प्रजा को ही अपनी सन्तान मानते थे।

राज्य कार्य से निपटने के बाद राजा कभी-कभी अपने मनोरंजन के लिए शिकार पर भी जाया करते थे। चूंकि राजा सतेन्द्र सिंह को शिकार खेलने का बहुत शौक था। इसीलिए वे शिकार खेलने जाते समय नागोत्रा को भी अपने साथ ले जाया करते थे।

एक दिन हमेशा की तरह राजा और मंत्री दो सजीले सुन्दर घोड़ों पर शिकार के लिए निकल पड़े।

नागोत्रा आज आखेट खेलने क्यों न अंडिया मानेरी के जंगलों की ओर चले। राजा ने राजमंत्री को चलने के लिए कहा।

–जी महाराज जैसी आपकी इच्छा।– मंत्री ने जवाब दिया।

और उन दोनों के घोड़े अंडिया मानेरी के जंगलों की ओर सरपट दौड़ पड़े। वह इतना घना जंगल था जहाँ वृक्षों के कारण दिन में भी अंधेरा छाया रहता था। राजा व मंत्री शीघ्र ही उस जंगल में पहुँच गए।

तभी उन्हें एक हिरण नजर आया। राजा ने शीघ्रता से अपने धुनष पर बाण साधा लेकिन तब

तक भयभीत हिरण कुलांचे भरता झाड़ियों के पीछे गायब हो गया। यह देखकर राजा ने अपना घोड़ा उसी ओर मोड़कर हिरण के पीछे लगा दिया।

राजा सतेन्द्र ने उसे बहुत ढूंढ़ा पर वह इस बार उन्हें कहीं भी नजर नहीं आया। तभी उन्हें ढूंढ़ते हुए मंत्री उनके समीप आ पहुँचा।

–कुछ नहीं शिकार हाथ से निकल गया।– राजा ने बुझे मन से जवाब दिया।

–जाने दीजिए राजन्! हम दूसरा शिकार ढूंढ़ते हैं चलिये।– मंत्री ने राजा से कहा।

–हमें जोरों से प्यास लगी है। नागोत्रा! प्यास के मारे हमारा गला सूखा जा रहा है।– राजा ने अपने सूखे होठों पर जीभ फेरते हुए कहा।

–ओह पानी... मैं अभी पानी की तलाश कर लौटता हूँ।

राजा को अपने पीछे सूखे पत्तों के चरमराने की आवाज सुनाई दी। राजा चौंककर शीघ्रता से मुड़े तो देखा एक बहेलिया कंधे पर जाल डाले उनकी ओर ही चला आ रहा था। करीब आकर उसने राजा को प्रणाम किया।

–कौन हो तुम?– राजा ने परिचय जानना चाहा।

–मैं एक गरीब बहेलिया हूँ राजन्।

–तुम तो इस वन से अच्छी तरह परिचित हो ना? क्या तुम हमारे लिए पीने के लिए पानी का प्रबन्ध कर सकते हो?

–जी हाँ। यहीं पास ही में एक स्वच्छ और मीठे जल का तालाब है।– बहेलिए ने आदरपूर्वक कहा।

राजा सतेन्द्र उसके पीछे चल पड़े।

शीघ्र ही वे जंगल के मध्य स्थित एक विशाल तालाब के पास पहुँचे। तालाब का स्वच्छ जल देखकर राजा की प्यास मानो और भी अधिक बढ़ चुकी थी।

–वाह पानी... वाह– राजा के होठों से खुशी के बोल फूट पड़े।

–अब आप जी भरकर पानी पी सकते हैं महाराज!– बहेलिए ने कहा।

तालाब के किनारे बैठ राजा ने दोनों हाथों में चुल्लु की भांति पानी भरकर पीने को अपने होठों से लगाया। लेकिन यह क्या उनके हाथों में पानी नहीं खून था। चौंककर उन्होंने फिर तालाब की ओर देखा। चारों ओर स्वच्छ निर्मल जल था। उन्होंने देखा बहेलिया भी चुल्लु से पानी लेकर पानी पी रहा था। उन्होंने हाथों में भरा हुआ पानी खून समझकर फेंक दिया। पुनः ज्योंही उन्होंने तालाब का निर्मल स्वच्छ जल हाथों में भरा तो फिर रक्त नजर आने लगा था।

–हे ईश्वर ये कैसा जादू है, प्यास के मारे तो मेरी जान ही निकली जा रही है।– राजा बुदबुदा उठे।

–ठहरिये राजन्! मैं आपको जल पिलाता हूँ।– राजा के पीछे से आवाज आई।

उन्होंने पलटकर देखा मंत्री तेजी से उनकी ओर ही चला आ रहा था।

–नागोत्रा ये कैसा जादुई तालाब है, यहाँ पानी नहीं रक्त है।

–राजन् अगर बुरा न मानें तो मेरे हाथों से पानी पी लीजिये।– कहते हुए मंत्री नागोत्रा ने अपने दोनों हाथों में तालाब का पानी राजा की ओर बढ़ाया।

राजा ने डरते-डरते पानी पीना शुरू किया लेकिन महान आश्चर्य नागोत्रा के हाथों में पानी रक्त नहीं बना।

–सचमुच आज तुमने मेरी जान बचाई है, नहीं तो प्यास के मारे आज मेरा दम ही निकल जाता।– राजा ने प्रसन्न स्वर में कहा और नागोत्रा की पीठ पर स्नेह से अपना हाथ रख दिया और वे लौटने लगे।

–नागोत्रा इस जादुई तालाब का रहस्य मेरी समझ में नहीं आया।– राजा ने उत्सुक स्वर में प्रश्न किया।

–राजन् अगर अभयदान हो तो मैं इसका रहस्य बताऊँ।– मंत्री ने गम्भीर स्वर में कहा।

–हाँ, हाँ निर्भयता से कहो जो तुम कहना चाहते हो।

–राजन् जब मैं आपके आदेश पर पानी की तलाश में निकला तभी एक वृक्ष पर बैठे कुछ बन्दरों को मैंने देखा और रूककर उनकी बातचीत सुनी। उनमें से एक बन्दरिया अपने बन्दर से कह रही थी।– सुनो जी, आज हमारे जंगल में एक निष्ठुर राजा आया है।

इस पर बन्दर ने कहा– अच्छा ... लेकिन मैंने तो सुना है वह बहुत दयालु और प्रजावत्सल राजा है।

–हूंह जो सिर्फ अपने मनोरंजन के लिए निरीह निर्दोष पशु-पक्षियों का वध करे भला वह दयालु और प्रजावत्सल कैसे हुआ। मनुष्यों की तरह

जंगल के पशु-पक्षी भी तो उनकी प्रजा है। फिर जंगल प्रजा को कष्ट क्यों पहुँचाता है भला? देखना ऐसा पापी प्यास से तड़प-तड़पकर मरेगा।– बंदरिया ने क्रोध भरे स्वर में जवाब दिया।

–और मैं इतना सुनकर आपके पास दौड़ा चला आया।– मंत्री ने पूरी बात कह सुनाई।

–ओह ये बात है सचमुच कितना पापी हूँ मैं... नागोत्रा। आज से हमारा शिकार खेलना बन्द, अब हम कभी ऐसा पाप नहीं करेंगे।

जानकारीपूर्ण लेख : कैलाश जैन एडवोकेट

आदमी से पहले धरती पर आया

शुतुरमुर्ग

संसार में 86 हजार से भी अधिक प्रकार के पक्षी पाए जाते हैं। शुतुरमुर्ग इन सभी में आकार और वजन की दृष्टि से सबसे बड़ा पक्षी है। अपने भारी शरीर और वजन के कारण यह पक्षी मुक्त आकाश में उड़ान भरने में असमर्थ है। संकट के समय अपनी गर्दन रेत में छुपा लेने की आदत के कारण यह मानव-समाज में उपहास का पात्र तथा कई कहावतों का नायक बना है किन्तु रेत में गर्दन छुपाने की यह अदा वास्तव में शुतुरमुर्ग की प्राकृतिक सुरक्षा व्यवस्था का एक भाग है। खतरे के समय यह अपनी गर्दन और सिर को रेत में छुपाकर अपने शरीर को गोलाकार बॉल के रूप में परिवर्तित कर लेता है ताकि शत्रु उसे चट्टान का एक टुकड़ा समझे।

शुतुरमुर्ग लाखों सालों से इस धरती का स्थायी निवासी है और संसार के अधिकांश भागों में यह पाया जाता है। सबसे बड़े आकार का शुतुरमुर्ग उत्तरी अफ्रीका में एटलस पर्वत के दक्षिण में सेनेगल और नाइजर तथा सूडान से लेकर मध्य इथियोपिया के क्षेत्रों तक पाया जाता है। वैसे भारत, सीरिया, ईराक, कुवैत, मिस्र, अफ्रीका आदि देशों में शुतुरमुर्गों की विभिन्न प्रजातियां पाई जाती हैं।

लम्बी टांगों व लम्बी गर्दन वाले इस पक्षी की ऊँचाई 8-9 फुट तथा वजन 120 से 150 किलोग्राम तक होता है। नर शुतुरमुर्ग का रंग काला तथा डैने व दुम सफेद होती है। मादा शुतुरमुर्ग आकार में अपेक्षाकृत छोटी होती है तथा उसका रंग भूरा होता है। इस पक्षी की लम्बी टांगों में दो पंजे होते हैं, जिनमें से एक काफी बड़ा होता है और इसी पर उसके शरीर का पूरा भार रहता है। इसके खबूसूरत पंखों की लम्बाई एक मीटर तक होती है। इसकी टांगे तथा चोंच बहुत मजबूत होती है। इसकी अंडाकार आँखें भी बहुत तेज होती हैं तथा इनसे वह दस किलोमीटर दूर तक देख सकता है। यह आश्चर्यजनक है कि इतने बड़े आकार के प्राणी के मस्तिष्क का आकार मटर के दाने के बराबर होता है।

मादा शुतुरमुर्ग रेत में बने छिद्रों में एक बार में 12 से 18 तक अंडे देती है। यह अंडे 15 से 20 सेंटीमीटर लम्बे तथा 1 किलो 700 ग्राम तक वजनी होते हैं। इनका व्यास 10 से 15 सेंटीमीटर तक होता है। अंडों को सेने का काम दिन में मादा तथा रात में नर द्वारा किया जाता है। 42 से 45 दिन बाद अंडों से बच्चे निकलते हैं। मादा शुतुरमुर्ग अपने डैनों से अपने बच्चों को ढककर उनकी रक्षा करती है। एक महीने में बच्चों का कद एक फुट बढ़ जाता है। मादा शुतुरमुर्ग अपने बच्चों की रक्षा के लिए हिंसक जंगली जानवरों से भिड़ जाने में भी नहीं हिचकिचाती।

प्रकृति ने शुतुरमुर्ग के उड़ नहीं पाने की कमी को उसे चलने की अत्यन्त तीव्र गति प्रदान करके पूरा किया है। यह साढ़े सात मीटर तक लम्बा डग भर सकता है और घोड़े से भी तेज गति से दौड़ सकता है। इसकी सामान्य गति पैंतीस किलोमीटर प्रति घंटा है किन्तु आवश्यकता पड़ने पर यह अस्सी किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से लगातार दस घंटे तक दौड़ सकता है। यह रेल अथवा मोटर की सामान्य गति से अधिक तीव्र गति से दौड़ सकता है। इसके पंख भले ही उड़ने में मदद नहीं करते हों लेकिन दौड़ने में ये बहुत सहायक होते हैं।

शुतुरमुर्ग आमतौर पर दस-बारह के समूह में रहना पसन्द करते हैं। इसका मुख्य आहार झाड़ियों के पत्ते, घास, बीज, फल आदि हैं। वैसे यह छोटी-छोटी चिड़ियों और कीट-पतंगों को भी खा लेता है। इसकी पाचन शक्ति इतनी अद्‌भुत है कि यह हरेक वस्तु को पचा सकता है। यह पत्थर तक खाकर हजम कर जाता है। चमकीली वस्तुएं इसे बेहद पसन्द हैं। सिक्के, हीरे, प्लग आदि यह आराम से खा जाता है। एक बार एक शुतुरमुर्ग के पेट से पचास से भी अधिक हीरे निकले थे।

क्रोध में आने पर शुतुरमुर्ग बहुत ही आक्रामक व घातक हो जाता है। आक्रमण के समय यह अपनी लम्बी टांगों तथा मजबूत चोंच का इस्तेमाल करता है। इसकी टांगों की मार से हिंसक पशु भी बचने का प्रयास करते हैं। क्रोध की अवस्था में इसकी चोंच के प्रहार की मारक क्षमता इतनी अधिक होती है कि वह लोहे के चद्दर तक में छेद कर सकता है।

इस पक्षी के पंख बहुत खूबसूरत होते हैं। दक्षिण अफ्रीका, मिस्र, अल्जीरिया आदि देशों में कई 'शुतुरमुर्ग फॉर्म' हैं, जहाँ इन्हें व्यावसायिक रूप से पाला जाता है। प्रत्येक आठ माह में एक बार इन पालतू शुतुरमुर्गों के पंख निकालकर उनका निर्यात कर विदेशी मुद्रा कमाई जाती है। इसके अतिरिक्त ये 'शुतुरमुर्ग फॉर्म' विदेशी पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं। यहाँ शुतुरमुर्ग पर बैठकर सवारी करने का मजा भी लिया जा सकता है।

शुतुरमुर्ग मानव-जाति के लिए पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखने में एक सहायक प्राणी है। यह इस धरती पर आदमी से बहुत पहले अस्तित्व में आया और स्वयं को वातावरण व परिस्थितियों के मुताबिक ढालकर आज भी अस्तित्व में है। शुतुरमुर्ग आदमी के लिए हर दृष्टि से उपयोगी पक्षी है। चोरी छुपे शुतुरमुर्ग का शिकार होने से इनकी संख्या में गिरावट आती जा रही है। पर्यावरण संरक्षण के लिए इनकी सुरक्षा किया जाना अनिवार्य है।

पढ़ो और हँसो

कक्षा में शिक्षक ने पूछा– बच्चों बताओ चाँद दूर है या अमेरिका?

एक छात्र बोला– सर, अमेरिका दूर है।

शिक्षक : वह कैसे?

छात्र : सर, चाँद को तो हम धरती से देख सकते हैं पर अमेरिका को नहीं।

★ ★ ★

माँ और बेटे ने गाँव जाने के लिए ट्रेन का टिकट लिया और गाड़ी में बैठ गए।

लड़का ट्रेन में शरारतें करने लगा। माँ ने डांटकर बैठा दिया।

लड़के ने कहा– अगर आप फिर गुस्सा करेंगे तो मैं टिकटचैकर को अपनी सही उम्र बता दूंगा।

★ ★ ★

पत्नी : (वैज्ञानिक पति से) अजी सुनिये।

पति : क्या है?

पत्नी : 'पानी बचाओ' संगोष्ठी में मत जाइएगा।

पति : क्यों?

पत्नी : चाँद पर पानी मिल गया है।

★ ★ ★

मालिक : (नौकर से) रामू, मैं नदी में डूब रहा हूँ।

रामू : मालिक अभी न डूबिए, आपने मेरा तीन महीने का वेतन देना है।

– रजित (ठाकुरपुरा, अम्बाला)

★ ★ ★

एक आदमी : (आम वाले से) क्या ये लंगड़े आम हैं?

आमवाला : जी हाँ, लंगड़े ही हैं। लंगड़े नहीं होते तो मैं इन्हें सिर पर उठाकर क्यों घूमता।

– सोनी चिरंकारी (खलीलाबाद)

★ ★ ★

प्रवीण : दो महीने के एक बच्चे के रोने की आवाज़ रिकॉर्ड कर रहा था।

दिनेश : ओय! तू यह क्या कर रहा है?

प्रवीण : अरे यार, मैं इस बच्चे की आवाज़ रिकॉर्ड कर रहा हूँ।

दिनेश : क्यों?

प्रवीण : जब ये बड़ा होगा, कम से कम मैं इससे पूछ तो पाऊँगा कि वह क्या बोलना चाह रहा था?

– ऋचा गोयल (रोहिणी, दिल्ली)

★ ★ ★

ऑपरेशन सफल होने के बाद मरीज से डॉक्टर ने कहा– अब तुम खतरे से बाहर हो, फिर भी तुम्हारे हाथ-पांव क्यों कांप रहे हैं?

मरीज बोला– दरअसल, डॉक्टर साहब, मैं जिस ट्रक से टकराया था, उस ट्रक के पीछे लिखा था– 'फिर मुलाकात होगी।'

– श्याम बिल्दानी 'सादगी' (बड़नेरा रेलवे)

★ ★ ★

डॉक्टर : (मरीज से) तुम बहुत कमजोर हो। तुम्हें छिलके सहित फल खाने की आवश्यकता है।

मरीज : ठीक है डॉक्टर साहब!

(दूसरे दिन)

डॉक्टर : (मरीज से) अब तुम घर जा सकते हो।

मरीज : डॉक्टर साहब! मेरे पेट में दर्द हो रहा है।

डॉक्टर : क्या खाया था?

मरीज : छिलके के साथ नारियल खाया था।

– गौरव पूजा (माधौगंज, हरदोई)

★ ★ ★

सोनू : (पापा से) पापा, अगर आप को पता चले कि मैं क्लास में पास हो गया हूँ तो आप क्या करोगे?

पापा : मैं तुझे एक नई साइकिल दिला दूंगा।

सोनू : पापा मैंने आपके पैसे बचा दिये। मैं फेल हो गया हूँ। अब साइकिल लेने की जरूरत नहीं है।

–दीपक कुमार 'दीप' (रेणुकूट, सोनभद्र)

★ ★ ★

योगिता : अगर किसी के साथ कोई समस्या हो जाए तो उसे किसके पास जाना चाहिए?

विनी : किसान के पास।

योगिता : वह क्यों?

विनी : क्योंकि उसके पास हल होता है।

– गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

वेटर : आपने समोसे और पकौड़े को अन्दर से खा लिया, लेकिन बाहर का सारा छोड़ दिया। ऐसा क्यों?

कस्टमर : क्योंकि, डॉक्टर ने कहा है, बाहर का खाना मत खाओ।

★ ★ ★

रात को ठक-ठक की आवाज सुनकर घर का मालिक जाग गया।

बोला – कौन है भाई?

दूसरी ओर से आवाज आई – चोर।

मालिक बोला – ठहर जा भाई, दिन में तो मुझे यहाँ कुछ मिलता नहीं। शायद तेरे साथ ढूंढने से कुछ मिल जाए।

★ ★ ★

शारदा : लोग कहते हैं कि दिन में देखा सपना सच नहीं होता। पर मेरा तो कल दिन का सपना सच हो गया।

निष्ठा : कैसे?

शारदा : कल दोपहर में क्लास में सोते-सोते सपना देख रही थी कि मेरी पिटाई हो रही है। जब मैं उठी तो सच में मेरी पिटाई हो रही थी।

– आर्यन (हरदेव नगर, दिल्ली)

प्रस्तुति : अशोक जैन

चार नन्हीं क्षणिकाएं

चिड़िया

रंग-बिरंगी प्यारी-प्यारी,
उड़ती और चहकती चिड़िया।
नीले, पीले चोंच हिलाकर,
आंखें मूंद मटकती चिड़िया।।

जुगनू

धरती के हैं तारे जुगनू,
हैं ना कितने प्यारे जुगनू।
लो, इनको हाथों में ले लो,
अब बन गये तुम्हारे जुगनू।।

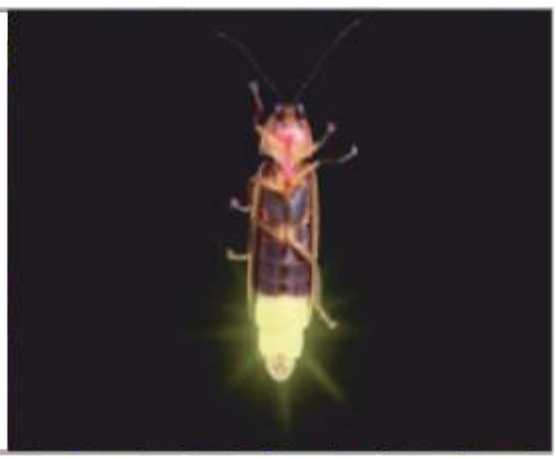

तितली

फूलों की ये सहेली है,
डाल-डाल पर खेली है।
जोड़े पंख नमस्ते में,
भौंराजी की चेली है।।

साड़ी है पहने सतरंगी,
बूटे वाली रंग-बिरंगी।
फूलों पर सोयी अलसाती,
देखो कैसी तितली रानी।

झरना

झर-झर झर-झर गाता झरना,
कहीं दूर से है आता झरना।।
हँसे हसाये, देखो कैसी,
कलाबाजियां खाता झरना।।

शास्त्री जी के जन्मदिवस (2 अक्टूबर) पर विशेष

प्रस्तुति : पृथ्वीराज

गुलाब-सा खिलो

यह बात उस मानव की है। जिसका मन कोमल बच्चों जैसा था। वह साधारण कद-काठी का था परन्तु साधारण कद-काठी के बावजूद वह दृढ़-इच्छा शक्ति और एक विशाल मनोबल का धनी था। वह व्यवहार में तो विनम्र था परन्तु दृढ़-निश्चय वाला था।

बच्चों! क्या तुम जानते हो यह साहसी और दृढ़-संकल्पी मानव कौन था? भारत का यह लाल आगे चलकर 'लाल बहादुर शास्त्री' के नाम से प्रसिद्ध हुआ और भारत का प्रधानमंत्री बना।

लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्म 2 अक्टूबर 1904 को मुगलसराय में हुआ था। उनका बचपन कष्ट में बीता परन्तु अपनी लगन और साहस के बल पर उन्होंने अभावों और कष्टों को पीछे छोड़ दिया।

शास्त्री जी के बचपन की एक घटना है। एक बार वे अपने साथियों के साथ खेल थे। जहाँ वे खेल रहे थे वहीं नजदीक एक बाग था। जिसमें तरह-तरह के फल लगे हुए थे। खेलते-खेलते साथियों के मन में फल खाने की इच्छा जाग्रत हुई। सब राजी हो गए। शास्त्री जी भी उनके पीछे-पीछे बाग में चले गये।

सभी बच्चे बाग में चौकीदार की नज़र बचाकर पेड़ पर चढ़ गए और फल तोड़कर खाने लगे लेकिन शास्त्री जी की दृष्टि में ऐसा कार्य करना गलत था। वे तो साथियों के साथ ऐसे ही आ गये थे। शास्त्री जी को एक स्थान पर गुलाब का खिला हुआ फूल दिखाई दिया, जो उन्हें बहुत पसन्द आया। शास्त्री को फूल इतना प्यारा लगा कि उन्होंने हाथ बढ़ाकर उसे तोड़ लिया। इसी बीच बच्चों का शोर हुआ– "भागो! भागो! माली आ गया है।" मगर शास्त्री जी तो केवल फूल की सुन्दरता में ही मग्न थे।

इसी बीच माली आ गया। वह बालक पर गुस्से हुआ और जैसे ही उसने मारने के लिए हाथ उठाया। शास्त्री जी के मुँह से अचानक निकल गया– मेरे पिता नहीं हैं, मुझे क्यों मारते हो?

बालक का भोला-भाला चेहरा देखकर और उसकी बात सुनकर माली रूक गया। माली ने उस बच्चे को ध्यान से देखा। उसका गुस्सा पहले से कुछ कम हुआ। वह बोला– जिनके भरोसे तुम आए थे, वे तो तुम्हें छोड़कर भाग गये। सोचो, जो संकट के समय मित्र को छोड़कर भाग जाएं वे साथी कैसे होंगे? साथी वही चुनो जो मुसीबत में भी साथ निभा सके। तुम्हारे पिता नहीं है। तुम्हारा व्यवहार और आचरण तो सबसे अच्छा और सबको खुश करने वाला होना चाहिए ठीक इस गुलाब की तरह।

बालक शास्त्री पर इन बातों का गहरा प्रभाव पड़ा। उस दिन उन्होंने सिर झुकाकर उन बातों को सुना तथा दोबारा कभी ऐसा कोई काम नहीं करने की मन ही मन प्रतिज्ञा की।

ईमानदारी और कड़ी मेहनत के बल पर वे देश के प्रधानमंत्री बने। 1965 के भारत-पाक युद्ध के समय उन्होंने देश का सफल नेतृत्व किया जिसके फलस्वरूप भारत को विजयश्री मिली। उस समय देश में अन्न का संकट भी था। दूसरी तरफ देश पर पाकिस्तान ने हमला कर दिया। ऐसी विषम स्थिति में उन्होंने कहा– अन्न उपजाने वाला किसान है और देश की रक्षा करने वाला जवान है इसलिए उन्होंने 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया। वे गुलाब की तरह वे खिले ही नहीं बल्कि महके भी। आज उनके न रहने पर भी उनकी यादों की सुगंध देशवासियों के मन में रची बसी है।

अगस्त अंक रंग भरो के श्रेष्ठ चित्र

1 **सुभाशुं शॉ** 14 वर्ष
39/8, डॉ. एस.पी. मुखर्जी रोड,
टीटागढ़, कोलकाता (प.बंगाल)

2 **लवलीन आहूजा** 13 वर्ष
म.नं. 1409/3, फेस - 11,
मोहाली (पंजाब)

3 **ऐश्वर्या** 10 वर्ष
95, उपासना इंक्लेव,
पॅडितवाड़ी, देहरादून (उत्तराखंड)

4 **रक्षित** 13 वर्ष
म.नं. 488, अशोका इंक्लेव,
फरीदाबाद (हरियाणा)

5 **स्नेहा, रजित** 12 वर्ष
गाँव : ठाकुरपुरा,
जिला : अम्बाला (हरियाणा)

इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं–

सेफाली गौतम (सुरैला, बस्ती), सिमरन, स्वर्णजीत (आदर्श नगर, फगवाड़ा), हार्दिक (सफदरजंग एन्क्लेव, दिल्ली), समीक्षा मेहरा (सुन्दर नगर, अजमेर), शुभ जयसवाल (कजरा, लखीसराय), आस्था गुप्ता (बुढ़ार, शहडोल), निहारिका (मोहाली), प्रकाश कुमार (बिना प्रोजेक्ट, सोनभद्र), आरूषि संधू (बंगोली, कांगड़ा), प्रथम हंस (हरदेव नगर, दिल्ली), कोमल (झाकड़ी, शिमला), सुजाता कुमारी (पंजाला, कांगड़ा), डोली शर्मा (बसियां ब्राह्मण,मोहाली), सिमरन, इश्वानदीप कौर, जैसमीन, कनिका पुण्डिर, मन्नत, अनिकेत, नेहा, अंशप्रीत कौर, अक्षित, साहिल (भटिण्डा), विवेक(लखनऊ),आयुष(चंद्रपुरी, रुद्रप्रयाग), नवरूप (पटेल नगर, गाजियाबाद), उत्तम, लवलेश कुमार, विपुल, मुक्ति (सुभाष नगर, महोबा), पूजा (गोंदिया), सौरभ सुखीजा, वंश चावड़िया।

अक्टूबर अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर-सुन्दर रंग भरकर **20 अक्टूबर** तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009 को भेज दें।

पांच श्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) **दिसम्बर अंक** में प्रकाशित किये जाएंगे।

चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।

15 वर्ष की आयु तक के बच्चे ही रंग भरकर भेज सकते हैं।

रंग भरो

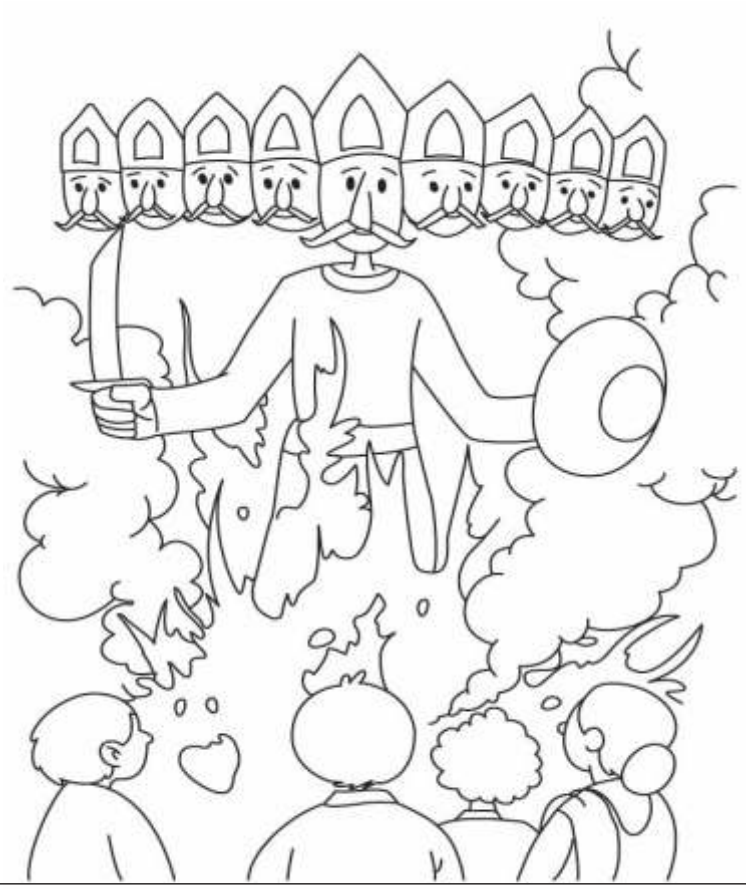

नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....

.....पिन कोड .....

हँसती दुनिया का जुलाई अंक पढ़ा। सबसे पहले लेख में 'सच्ची खुशी' से हमें प्रेरणा मिलती है कि हमें अपने काम में सदैव अग्रणी रहे परन्तु दूसरों को भी प्रोत्साहित करना चाहिए। स्कूली बच्चों पर लिखित 'अब तो करनी हमें पढ़ाई' (महेन्द्र सिंह शेखावत) कविता खास पसन्द आई। बाकी कविताएं भी अच्छी लगीं। – श्याम बिल्दानी 'सादगी' (बड़नेरा)

मैं हँसती दुनिया का सदस्य हूँ। मुझे और मेरे परिवार को इस पत्रिका का बेसब्री से इन्तजार रहता है। हँसती दुनिया का अर्थ ही सहज भाव में यह है कि यह संसार हँसता रहे। यह पत्रिका हमें अच्छे गुणों तथा संस्कारों को प्राप्त करने की प्रेरणा देती है।

हँसती दुनिया के माध्यम से आप ज्ञान और शिक्षा का जो कार्य कर रहे हैं वह बहुत ही सराहनीय है। इसमें कहानियां स्तम्भ एवं प्रेरक-प्रसंग हमारे लिए उपयोगी हैं। – गणेश (दिल्ली)

मुझे हँसती दुनिया बेहद पसन्द है। हमारे पड़ोसियों को भी हँसती दुनिया बहुत अच्छी लगती है। उनका कहना है कि हँसती दुनिया सिर्फ बच्चों का ही मार्गदर्शन नहीं करती बल्कि बड़ों के लिए भी बहुत उपयोगी है।

यह बच्चों के बौद्धिक विकास में सहायक है। यह पत्रिका शिक्षाप्रद कहानियों, कविताओं और विशेष लेखों द्वारा बुद्धिमत्ता दर्शाती है।

यह पत्रिका दिन पर दिन निखर कर आ रही है। ऐसी परमात्मा-प्रभु से प्रार्थना है कि यह और ऊँचाइयों को छूये।

– लविना टॉक (केकड़ी, अजमेर)

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं अनेकों प्रान्तों की विभिन्न भाषाओं में छप रही हैं। हर प्रान्त की भाषा की पत्रिकाओं को बढ़ावा मिले और इनकी पाठक संख्या बढ़े इसकी जरूरत है। 'हँसती दुनिया'– हिन्दी, पंजाबी, मराठी, अंग्रेजी तथा 'सन्त निरंकारी'– हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, मराठी, बंगाली, गुजराती, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, नेपाली, उड़िया व 'एक नजर'– हिन्दी, पंजाबी, मराठी लगातार प्रगति कर रही हैं। पाठक और ब्रांच स्तर पर इनके प्रोत्साहन की आवश्यकता है। वर्तमान में हँसती दुनिया, सन्त निरंकारी और एक नजर की चंदा राशि 150 रुपये एक वर्ष के लिए तथा 700 रुपये पाँच वर्ष के लिए है। कृपया आप अपनी पत्र-पत्रिकाओं की चंदा राशि जमा कराना सुनिश्चित कर लें।

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं यूं तो सभी सदस्यों को नियमित रूप से निश्चित तारीखों पर भेज दी जाती हैं। फिर भी किसी माह डाक विभाग या किसी अन्य कारण से पत्रिका न मिलने की स्थिति में कृपया पत्रिका विभाग दिल्ली को पत्र, फोन, E-Mail या 'व्हाट्सऐप' द्वारा नीचे दिए गए विवरण अनुसार सूचना दें–

पत्रिका-प्रकाशन विभाग, सन्त निरंकारी मण्डल, एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक, निरंकारी चौक, बुराड़ी रोड, दिल्ली-110009

Phone : +91-11-47660200, Extn. 862
Fax : +91-11-47660300, 27608215,
Help Line : 47660360, 859,
WhatsApp : 9266629841,
Email : patrika@nirankari.org

– सी.एल. गुलाटी, प्रभारी, पत्रिका-प्रकाशन सं.नि.मं., दिल्ली-110009

kids Nirankari
spiritual dreamland for kids

Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness
Experience online spiritual learning with exciting and fun features highlights our mission's message.
Visit regularly to watch tiny tots excelling in the spiritual journey.

kids.nirankari.org

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share
your talent in form of painting, poetry & story

Registered with the Registrar of Newspaper For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. G-3/DL(N)/136/2018-20
Licence No. U (DN)-23/2018-20
Licenced to post without Pre-payment

निरंकारी पत्र-पत्रिकाएं पढ़ें और पढ़ाएं!

हँसती दुनिया (चार भाषाओं में) | सन्त निरंकारी (ग्यारह भाषाओं में) | एक नज़र (तीन भाषाओं में)

'सन्त निरंकारी', 'हँसती दुनिया' (हिन्दी, पंजाबी व अंग्रेजी) एवं 'एक नज़र' (हिन्दी/पंजाबी) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

पत्रिका विभाग, निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली-110009

Ph. 011–47660200, E-mail : patrika@nirankari.org

सन्त निरंकारी, हँसती दुनिया, एक नज़र (मराठी) व सन्त निरंकारी (नेपाली) की सदस्यता के लिए सम्पर्क करें

Sant Nirankari Satsang Bhawan

1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI - 400 014 (Mah.)

e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org

अन्य भाषाओं की पत्रिकाओं की सदस्यता के लिए निम्नानुसार सम्पर्क करें

TAMIL

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
#7, Govindan Street,
Ayavoo Naidu Colony, Aminji Karai,
CHENNAI-600 029 (T.N.)
Ph. 044-23740830

ORIYA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
Kazidiha, Post : Madhupatna,
CUTTACK-753 010 (Orissa)
Ph. 0671-2341250

TELUGU

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
No. 6-2-970, Khairtabad,
HYDERABAD- Pin : 500 029 (TS)
Ph. 040-23317679

GUJRATI

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
1st Floor, 50, Morbag Road,
Naigaon, Dadar (E)
MUMBAI - 400 014 (Mah.)
Ph. 22-24102047

KANNADA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
88, Rattanvillas Road,
Southend Circle, Basavangudi,
BENGALURU-560 023 (Karnataka)
Ph. 080-26577212

BANGLA

Sant Nirankari Satsang Bhawan,
884,G.T. Road, Laxmipur-2
East Bardhman—713101
Ph. 0342-2657219

पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार अभियान में योगदान देकर सद्गुरु माता जी के आशीर्वाद के पात्र बनें

Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd., Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)